

भक्तिमय-रसमाला

१०३

संग्रहकर्ता एवं प्रकाशक :

शीला देवी आर्या

२१/२-B मान सरोवर

गली नं० ४, मेरठ

द्वितीय संस्करण १०००

सन् १९६८

मूल्य : रु० १२.०० मात्र

मुद्रक : सुधाकर मुद्रणालय, ३३६ स्वामी पाड़ा, बुढ़ाना गेट, मेरठ



५१७३६३

॥ ओ३म् ॥

बहनों की अत्यन्त अधिक माँग पर मैंने भक्तिमय रसमाला में कुछ भजनों को सम्मिलित किया है।

जिससे बहनों को अधिक से अधिक धर्मलाभ मिल सके मैंने भजन संग्रह करने में काफी मेहनत की है। जो आप सबको बहुत पसंद आयेंगे।

भक्तिमय रसमाला में

- (१) ४-५ प्रार्थनायें
- (२) ४-५ ब्रह्मानन्द के भजन
- (३) भजन आशीर्वाद
- (४) जन्मदिन पर सतमासा
- (५) बरन बरनी व वधावा
- (६) रामकृष्ण के भी ३-४ भजन
- (७) ३-४ भजन ऋषि दयानन्द के
- (८) मंगल कामना और बाकी बहुत सुन्दर भजन हैं।
- (९) २-३ भजन सीता जी के भी हैं।

दो शब्द

मैं १९८४ को आर्य समाज साकेत मेरठ के महिला सत्संग में गया, वहाँ माता जी शीला देवी से परिचय हुआ और वह परिचय यहाँ तक बढ़ा कि मैंने "भक्तिमय-रसमाला" इनके संग्रहीत भजनों को एक पुस्तककाकार रूप देने की प्रेरणा दी और पुस्तक का नामकरण भी किया।

मेरी प्रेरणा को शीघ्र पूर्ण करने में माता जी तत्पर हुई और यह पुस्तक उनकी धार्मिक भावनाओं का परिचय भी दे रही है, साथ ही एक टूटे हृदय को किस प्रकार ईश्वर की भक्ति के भजन गा-गा कर उन्होंने सम्भाला है। इसकी भी झलक आ रही है।

आप स्पष्ट स्वभाव तथा दयालु हृदय हैं। प्रभु देव से यही कामना है कि वह इस परिवार को व माता जी को स्वस्थ, समृद्ध तथा दीर्घायु करें।

—रामप्रकाश सरस शास्त्री

कृतज्ञ हूँ

पूज्य श्री रामप्रकाश सरस शास्त्री से मेरा परिचय क्या हुआ बल्कि आपका स्नेह देने के लिए व श्रद्धा भक्ति बढ़ाने के लिए स्थान मिला।

जैसा उन्होंने मेरे पति के विषय में सुना वैसा ही लिखकर तथा मेरे संग्रहीत भजनों को "भक्तिमय-रसमाला" नाम दिया व प्रकाशन करने की प्रेरणा दी। मैं शास्त्री जी की हृदय से बहुत आभारी हूँ। पुस्तक प्रकाशन का श्रेय शास्त्री जी को है।

प्रभु मेरे इस पवित्र कार्य को पूरा करने की सामर्थ्य दे। यही कामना है।

— शीला देवी आर्या

स्व० चौधरी आलम सिंह जी की मधुर चिर स्मृति में

उनका परिवार

प्रोफेसर चौधरी आलम सिंह अपने व्यक्तित्व के धनी थे। परिवार से भी ईश्वर की दया से सुसम्पन्न थे। आपके पिता श्री हुक्मचन्द जी अपने ग्राम लिब्बर हेड़ी, सहारनपुर जनपद के आनरेरी मजिस्ट्रेट थे। आपकी शिक्षा कक्षा आठ तक मंगलौर में हुई और कक्षा १० पास आपने मुजफ्फरनगर से की। तत्पश्चात् आप कानपुर कृषि महाविद्यालय से एम० एस- सी० करके इसी महाविद्यालय में पूसा से ट्रेनिंग करने के उपरान्त प्रोफेसर नियुक्त हुए। आपने ३० वर्ष तक अध्यापन कार्य किया।

आप वैदिक विचारधारा से ओत-प्रोत थे, वैसी ही आपकी धर्मपत्नी श्रीमती शीला देवी भी मिली।

आपके दो सन्तानें हैं, बड़ी पुत्री सरोज जो अपने पति श्री राम कृपाल सिंह के साथ देहरादून हैं। श्री रामकृपाल सिंह अवकाश प्राप्त कर्नल हैं।

दूसरे पुत्र श्री विजय कुमार कर्नल कलकत्ता हैं। आपको पुत्रवधु आशा रानी भी कलकत्ता में अध्यापिका हैं। विजय कुमार जी के दो सन्तानें हैं।

चौधरी आलम सिंह जी का शिक्षा जगत में अच्छा स्थान था। आप २१ वर्ष पैरालैसिस बीमार रहें, पर इस बीमारी के दौरान भी उनका स्वास्थ्य व खाना-पीना सही नियमित रूप से चलता रहा। केवल अन्तिम ४-५ दिन ही तकलीफ हुई और २७-९-८१ को आपने अपने पार्थिव शरीर को छोड़कर माता शीला देवी को सदैव के लिए अपने वियोग का दुखिया बना दिया।

आपका सींचा यह परिवार तथा आपकी सेवाओं का आभारी कृषि महाविद्यालय कानपुर सदैव गीत गाता रहेगा।

—रामप्रकाश सरस शास्त्री

भजन १

भगवन मेरा सहारा, तेरे सिवा नहीं है।
 आधार एक तू है, और दूसरा नहीं है।
 तू बन्धु, तू सखा है, तू बाप, तू ही माँ है।
 तेरे सिवा न कोई, माता पिता नहीं है।
 मैं कौन वस्तु लाऊँ, जिससे तुझे रिझाऊँ।
 जो कुछ है सब है तेरा, कुछ भी मेरा नहीं है।
 मैं भी तो मैं नहीं हूँ, मेरा भी क्या ठिकाना।
 सर्वस्व तू है भगवन, तू क्या है क्या नहीं है।

भजन २

विनती सुन लो हे भगवान, हम सब बालक हैं नादान।
 विद्या बुद्धि नहीं कुछ पास, हमें बना लो अपना दास।
 पैदा तुमने किया सभी को, रुपया पैसा दिया सभी को।
 हाथ जोड़कर खड़े हुए हैं, पैरों पर हम पड़े हुए हैं।
 बुरे काम से हमें बचाना, खूब पढ़ाना खूब लिखाना।
 बड़ा-बड़ा पद पावेंगे हम, तुम्हें नहीं बिसरावेंगे हम।
 लो फिर शीश नवाते हैं हम, विद्या पढ़ने जाते हैं हम।

वैदिक प्रार्थना

भजन ३

सुमति दे हम सबको भगवान, करें सबका स्वागत सम्मान,
 सब को प्रेम सहित अपनायें,
 जीव मात्र को सुख पहुँचायें, करें नहीं अपमान ॥ सुमति दे-॥१॥
 सीखें सब की सेवा करना, सीखें दुखियों के दुःख हरना,
 हो ना कभी अभिमान ॥ सुमति दे-॥२॥
 अपना सा दुःख सबका जानें, अन्तरात्मा को पहचानें,
 रहे सदा यह ध्यान ॥ सुमति दे-॥३॥
 कभी न कष्टों से घबड़ायें, भयभीत न हों,
 हों गंभीर महान ॥ सुमति दे-॥४॥

विद्या, विनय, विवेक बढ़ावें, काम, क्रोध, मद लोभ हटावें,
 पालें वेद विधान ॥ सुमति दे-५ ॥
 अनिल, अनल, जल, व्योम मही में त्रिजग देव नर असुर सभी में
 करें तेरी पहचान ॥ सुमति दे-६ ॥
 सब मिल ध्यान धरें हम तेरा, उठे अविद्या का अब डेरा,
 बड़े ज्ञान विज्ञान ॥ सुमति दे-७ ॥
 प्रभु हर नर नारी के अन्दर, जगे ज्ञान की ज्योति निरंतर,
 नाशे तम अज्ञान ॥ सुमति दे-८ ॥
 वेदों का आदेश यही है, सदगुरु का संदेश यही है, हो सबका
 कल्याण ॥ सुमति दे-९ ॥
 जो यह विनय कर मन लाई, मन वांछित आवे बरियाई,
 पावे पद निर्वाण ॥ सुमति दें-१० ॥
 अन्तिम यहाँ विनय है मेरी, रहे निरन्तर कृपा धनेरी
 हंस आपनो जान ॥ सुमति दे-११ ॥

भजन ४

देव तुम्हारे कई उपासक कई ढंग से आते हैं ।
 सेवा में बहुमूल्य वस्तुयें, लाकर तुम्हें चढ़ाते हैं ॥ देव-१ ॥
 धूप दीप नैवेद्य नहीं है, झाँकी का श्रृंगार नहीं ।
 हाथ गले में पहिनाने को, फूलों का इक हार नहीं ॥ देव-२ ॥
 कैसे स्तुति करँ तुम्हारी, स्वर में है माधुर्य नहीं ।
 मन का भाव प्रगट करने को, मेरे में चातुर्य नहीं ॥ देव-३ ॥
 नहीं दान है नहीं दक्षिणा, खाली हाथ चली आई ।
 पूजा की विधि नहीं जानती, फिर भी नाथ चली आई ॥ देव-४ ॥
 पूजा और पुजापा प्रभुवर, इसी पुजारिन को समझो ।
 दान दक्षिणा और न्यौछावर, इसी भिखारिन को समझो ॥ देव-५ ॥
 मैं उन्मत्त हूँ प्रेम की लोभी, हृदय दिखाने आई हूँ ।
 जो कुछ है बस यही पास है, इसे चढ़ाने आई हूँ ॥ देव-६ ॥
 चरणों पर है अर्पण, इसको चाहे तो स्वीकार करो ।
 यह तो बस तुम्हारी है, तुम्हारा स्वीकार करो ॥ देव-७ ॥

भजन ५

पितु मात सहायक स्वामी सखा तुम ही एक नाथ हमारे
 जिनके कछु और आधार नहीं, तिन के तुम ही रखवारे
 सब भाँति सदा सुखदायक हो, दुख दुर्गुण नाशन हारे
 प्रतिपाल करो सिगरे जग को, अतिशय करुणा उर धारे
 भूलि हैं हम ही तुमको, तुम तो हमरी सुधि नाहि बिसारे
 उपकारन को कछु अन्त नहीं, छिन ही छिन जो विस्तारे
 महाराज महा महिमा तुम्हरी, समझें, बिरले बुधवारे
 शुभ शान्ति निकेतन प्रेम निधे, मन मन्दिर में उजियारे
 परि जीवन के तुम जीवन हो, इन प्राणन के तुम प्यारे
 तुम तो प्रभु प्रताप हरि, कोई के अब और सहारे

भजन ६

- १—भरोसा कर तू ईश्वर पर, तुझे धोखा नहीं होगा ।
 यह जीवन बीत जायेगा, तुझे रोना नहीं होगा ।
- २—कभी दुःख है कभी सुख है, यह जीवन धूप छाया है ।
 हँसी में ही बिता डालो, बितानी ही यह माया है ॥
- ३—जो सुख आये तो हँस देना, जो दुःख आये तो सह लेना ।
 न कहना कुछ कभी जग से, प्रभु से ही तू कह लेना ॥
- ४—ये कुछ भी तो नहीं जग में, तेरे बस कर्म की माया ।
 तू खुद ही धूप में बैठा, लखे निज रूप की छाया ॥
- ५—कहाँ यह था कहाँ तू था, कभी तो सोच ओ बन्दे ।
 झुका कर शीश को कह दे, प्रभु वन्दे प्रभु वन्दे ॥

भजन ७

- लगा ले प्रेम ईश्वर से, अगर तू मोक्ष चाहता है ।
- १—रचा उसने जगत सारा, करे वह पालना सबकी ।
 वही मालिक है दुनिया का, पिता माता विधाता है ॥
 - २—नहीं पाताल के अन्दर, नहीं आकाश के ऊपर ।
 सदा वह पास है तेरे, कहाँ दूँटन को जाता है ॥

- ३—करो जप नेम तप भारी, रहो जाकर सदा वन में ।
 बिना सतगुरु की संगत से, नहीं वह पास आता है ॥
- ४—पड़े जो शरण में उसकी, छोड़ दुनिया की लालच को ।
 वह ब्रह्मानन्द निश्चय से, परम सुख धाम पाता है ॥

भजन ८

- मुझे है काम ईश्वर से, जगत रूठे तो रूठन दे ।
- १—कुटुम्ब परिवार सुतदारा, माल धन लाख लोकन की ।
 प्रभु का भजन करने में, अगर छूटे तो छूटन दे ॥
- २—बैठ संगत में सन्तों की, करूँ कल्याण मैं अपना ।
 लोक दुनिया के भोगों में, मौज लूटे तो लूटन दे ॥
- ३—प्रभु के ध्यान करने की, लगी दिल में लगन मेरे ।
 प्रीति संसार विषयों से, अगर टूटे तो टूटन दे ॥
- ४—धरी सिर पाप की मटकी, मेरे गुरुदेव ने झटकी ।
 वो ब्रह्मानन्द ने पटकी, अगर फूटे तो फूटन दे ॥

भजन ९

- करो प्रभु का भजन प्यारे, उमरिया बीत जाती है ।
- १—पूर्व शुभ कर्म कर आया मनुज तन धरणि में आया ।
 फिर विषयों में भरमाया, मौत नहीं याद आती है ॥
- २—बालपन खेल में खोया, जवानी काम वश होया ।
 बुढ़ापे खाट पर सोया, आश मन को सताती है ॥
- ३—कुटुम परिवार सुतदारा स्वपन सम देख जग सारा ।
 माया ने जाल विस्तारा, नहीं यह संग जाती है ॥
- ४—जो प्रभु के चरण चित लावे, वो भव सागर से तर जावे ।
 ब्रह्मानन्द मोक्ष पद पावे, वेद वाणी सुनाती है ॥

भजन १०

ईश्वर से करते जाना प्यार, ओ नादान मुसाफिर ।
 ईश्वर लगावे नैयार पार, ओ नादान मुसाफिर ॥
 आशा न छोड़ देना, प्रीति ना तोड़ देना, डूबेगा वना

तू मझदार। ओ नादान मुसाफिर॥ ईश्वर० ॥
 बच्चों से बचते जाना, जग में शुभ कर्म कमाना।
 जीवन जो पाया है, दिन चार। ओ नादान मुसाफिर॥ ईश्वर० ॥
 दुखियों का दर्द मिटाना, तन मन धन भेंट चढ़ाना।
 जिनना हो करले पर उपकार। ओ नादान मुसाफिर॥ ईश्वर० ॥
 ईश्वर है अन्त गढ़ाई, उसको न भूलो भाई।
 भोखा है देश गभी गंगार। ओ नादान मुसाफिर॥ ईश्वर० ॥

भजन ११

- मन की मैल मिटा दो, इक ज्योति जगा दो।
 १— तेरे बिना प्रभु कौन है मंग, मैं हूँ तेरा तू है मेरा।
 निर्मल बूझि बना दो, इक ज्योति जगा दो॥ मन की—
 २— पाप की हैं घनघोर घटायें, बादल गरजें मुझे डरायें।
 उनमे नाथ बचा दो, इक ज्योति जगा दो॥ मन की—
 ३— मन मेग ना कावू आये, पग-पग पगला ठोकरें खाये।
 इसको राह दिखला दो, इक ज्योति जगा दो॥ मन की—
 ४— देख लिया है यह जग सारा, दुःख में देता कौन सहारा।
 अपना हाथ बढ़ा दो, इक ज्योति जगा दो॥ मन की—
 ५— आया भिक्षुक मैं तेरे द्वारे, मन-मन्दिर की खोल किवाड़ें।
 जीवन गीत सुना दो, इक ज्योति जगा दो॥ मन की—
 ६— इस कुटिया में आनन्द भर दो, रोम-रोम प्रकाशित कर दो।
 बालक हूँ अपना लो, इक ज्योति जगा दो॥ मन की—

भजन १२

हे प्रभु तेरी शान पर सारा जगत निसार है।
 कल्याणकारी हो प्रभु तेरा ही नाम अपार है॥
 बच्चे तेरे ही हम दुखी, आके प्रभु खबर तो लो।
 हमने सुना है कष्ट में सब का तू मददगार है॥ हे प्रभु—॥
 कोई भिखारी आ गया, तेरे दुआर पर अगर।

झोली परी मिली उसे, ऐसा दोष भण्डार है॥ हे प्रभु—॥

भजन १३

मेरे मन की तार-तार में भगवान छिपे हैं,
मेरी श्रद्धा, मेरे प्यार में भगवान छिपे बैठे हैं।
ये सूरज चाँद और तारे ये लोकान्तर लोक सारे,
सागर की गहरी धार में भगवान छिपे बैठे हैं ॥ मेरे-
ये नदियाँ नाले सारे, ये जंगल पर्वत सारे।
इन फूलों की गुंजार में, भगवान छिपे बैठे हैं ॥ मेरे-
बाहर नहीं ढूँढन जाना, अन्दर ही ज्योति जगाना।
हृदय की गुहा विचार में, भगवान छिपे बैठे हैं ॥ मेरे-
जब अन्तर ध्यान लगाया, प्रभु जी का दर्शन पाया।
मेरे रोम-रोम संचार में भगवान छिपे बैठे हैं ॥ मेरे-
उनसे नहीं कुछ छिपाना, यो पापों से बच जाना।
ज्योति में, अन्धकार में, भगवान छिपे बैठे हैं ॥ मेरे-

भजन १४

मत हीरा जनम गंवाओ, कुछ कर लो नेक कमाई।
खप-खप के जन माया जोड़ी, बन गये लखपति और करोड़ी।
चलती बार सब यहीं छोड़ी, क्यों तुम जान खपाओ।
नहीं साथ चले इक पाई। मत हीरा० ॥१॥
परम गुरु वेदों को मानो, इष्ट देव ईश्वर पहचानो।
मत गफलत तम्बू तानो, धन ही धर्म कमावो।
होगा जो अन्त सहाई। मत हीरा० ॥२॥
इन्द्रियों को वश में रखे, प्रेम पिपा का अमृत चाखो।
सत्य कहो पर कदु नहीं भाखो, अपना जगत बनाओ।
तुम ले लो मुफ्त भलाई। मत हीरा० ॥३॥
शम दम धीरज मन में धारो, पाप कर्म से रहो न्यारो।
गायत्री का मन्त्र विचारो, गुण ईश्वर के गावो।
गर चाहो अपनी भलाई। मत हीरा० ॥४॥

भजन १५

- १—बंसाया न प्रभु दिल में, तो गुण गाने से क्या होगा ?
 मिटाये दुःख न औरों के, भला जीवन में क्या होगा ?
 यह जीवन है मिला तुमको, जख्म दुनियाँ के सीने को ।
 तू छिड़केगा नमक उन पर, तेरे जख्मों का क्या होगा ? बसाया०
- २—तू कर दुनियाँ में परमार्थ, तू जड़ से त्याग दे स्वार्थ ।
 है वेदों की यही शिक्षा, इसी तरह हक अदा होगा ?
 प्रभु तुम पर फिदा होगा । बसाया०
- ३—बुलायेगा तो आयेगा, वह देरी न लगायेगा ।
 रहेगा वह पास तेरे, कभी भी न जुदा होगा ? बसाया०
- ४—तू कर शुद्ध अपना यह तन मन, वह सँपेगा तुझे सब धन ।
 तू दृढ़ विश्वास रख उस पर, वह तेरा गम मिटायेगा ? बसाया०
- ५—भरी सब शक्तियाँ तुझमें, भरी सब भक्तियाँ तुझमें ।
 तू पहचाने न गर खुद को, प्रभु पर क्या गिला होगा ।
 प्रभु पर क्या गिला होगा, बसाया न — ॥

भजन १६

- प्रभु सारी दुनियाँ से, ऊँची तेरी शान है ।
 कितना महान है, तू कितना महान है ।
- १—यहाँ वहाँ कोने-कोने तू ही मशहूर है ।
 निकट से निकट और दूर से भी दूर है ।
 तुझ में समाया हुआ सकल जहान है ।
 कितना महान है, तू कितना महान है । प्रभु०
- २—तू ही एक मालिक है, सारी कायनात का ।
 फूलों भरी क्यारियों का, तारों की जमात का ।
 तेरी ही जमीन और तेरा आसमान है ।
 कितना महान है, तू कितना महान है । प्रभु०
- ३—सब में जो रंग, देखे, सभी तेरे रंग हैं ।
 जग में अनेक तेरे, पालने के ढंग हैं ।
 तुझ को तो छोड़े बड़े, सबका ही ध्यान है ।

कितना महान है, तू कितना महान है प्रभु०
 ४—जितने भी दुनियाँ में जीव देह धारी हैं।
 सभी तेरे प्यार के, समान के अधिकारी हैं।
 प्रभु तूने दिया सब को वरदान है।
 कितना महान है, तू कितना महान है प्रभु०
 मनुष्य जन्म से नहीं कर्म से महान बनता है।

भजन १७

भक्ति कर भगवान की, काम तेरे जो आयेगी।
 पाप भरी ये आत्मा, ऊँचा इसे उठायेगी।
 पर उपकार के भाव हमेशा, अपने अन्दर लाता जा।
 दोष तेरे जो जीवन में हैं, उनको दूर हटाता जा।
 ज्योति फिर आनन्द की, अन्दर ही जगमगायेगी। भक्ति०
 अमृत वेले जाग के पावन होके आसन ले जमा।
 ईश्वर के गुण धारण करके, समीप दिन-दिन होता जा।
 प्रीति प्राणाधार की, अपना रंग जमायेगी। भक्ति०
 सतसंगी जो रहा, सदा ही ऊँचा उठता जायेगा।
 दर्शन जब भगवान के होंगे, मुक्ति पद को पायेगा।
 तृपना बनके मेविका, तेरे चरण दबायेगी। भक्ति०
 किन्तु किया जो आलस तूने, इतना तुझको ध्यान रहे।
 दुनियाँ तेरा साथ न देगी, ना साथी भगवान रहे।
 माया ममता ही तुझे उल्टा नाच नचायेगी। भक्ति०

भजन १८ अनुसरण

इस दुनियाँ में, इस दुनियाँ में धर्मी धर्म का धन ढूँढे
 और पापी माल खजाना, इस दुनियाँ में—॥१॥
 मुट्ठी बाँधे आया था और हाथ पसारे जायेगा।
 इस जग में न कुछ लाया था, और न कुछ साथ ले जायेगा,
 इस दुनिया में —॥२॥
 जग जीवन में जीव का आना, कर्म भोग में फँसना रे।
 नाम अमर कर इस जीवन को, सुखी सार्थक बनाना रे।

Digitized by eGangotri Samskrtika Chhatrapati Samrat Pratap Singh
इच्छाओं पर नियम पात कर, पुरुषार्थ और साहस

भरकर कर्म योग में जुट जा रे।

इस दुनिया में — ॥४॥

यम नियम से मन शुद्धि कर, शान्त भाव से धैर्य धर कर।

ध्यान योग में लग जा रे।

इस दुनिया में — ॥५॥

जनसेवा से जीव का आदर, प्रेम पूर्वक विद्या दान कर।

ज्ञान योग में बस जा रे।

इस दुनिया में — ॥६॥

भक्ति भाव से आत्म समर्पण, सुधर्म-धर्म का नित

पालन कर सच्चिदानन्द में रम जा रे।

इस दुनिया में — ॥७॥

भजन १९

किसी के काम जो आये, उसे इन्सान कहते हैं।

पराया दर्द अपनाये, उसे इन्सान कहते हैं।

कभी धनवान है कितना, कभी इन्सान निर्धन है।

कभी सुख है कभी दुख है, इसी का नाम जीवन है।

जो मुश्किल में न घबराये, उसे इन्सान कहते हैं। किसी०

यह दुनियाँ एक उलझन है, कहीं धोका, कहीं ठोकर।

कोई हँस-हँस के जीता है, कोई जीता है रो-रो कर।

कोई गिर कर सँभल जाये, उसे इन्सान कहते हैं। किसी०

अगर गलती रुलाती है, तो राहें भी दिखाती हैं।

मनुज गलती का पुतला है, वो अक्सर हो ही जाती है।

जो कर ले ठीक गलती को, उससे इन्सान कहते हैं। किसी०

यों भरने को तो दुनियाँ में, पशु भी पेट भरते हैं।

लिये इन्सान का दिल जो, वो नर परमार्थ करते हैं।

पथिक जो बाँट कर खाये, उसे इन्सान कहते हैं। किसी०

भजन २०

तर्ज—बहारों फूल बरसाओ—

मगन ईश्वर की भक्ति में, अरे मन क्यों नहीं होता ।
 पड़ा आ आलस्य में मूरख, रहेगा कब तलक सोता ॥
 जो इच्छा है तेरे कट जायें, सारे मैल पापों के ।
 प्रभु के प्रेम जाल में क्यों नहीं, अपने को तू धोता ॥
 विषय और भोग में फँसकर, न कर बरबाद जीवन को ।
 दमन कर चित्त की वृत्ति, लगा ले योग में गोता ॥
 नहीं संसार की वस्तु कोई भी, सुख की हेतु है ।
 वृथा इनके लिए फिर क्यों, समय अनमोल तू खोता है ॥
 धर्म ही एक ऐसा है, जो होगा अन्त में साथी ।
 न पत्नी काम आयेगी, न बेटा और न कोई पोता ॥
 भटकता जा बजा नाहक, फिरे सुख के लिए सलिंग ।
 तेरे हृदय के भीतर ही, बहे आनन्द का सोता ॥

भजन २१

जपो मन नाम ईश्वर का, वही मुक्ति का दाता है ।
 वही पालन करे सबका, वही सबका विधाता है ॥
 सिवा उसके नहीं तेरा, कोई संसार में साथी ।
 वही हमदम बने, आखिर, जो बिगड़ी को बनाता है ॥
 न कर अभिमान तू वृथा, क्षणिक जीवन को पाकर के ।
 स्वप्न संकल्प की सृष्टि, जिसे सुबह भ्रम होने वाली है ।
 नकारा कूच का कोई, खड़ा सिर पर बजाता है ॥
 सता ना बेगुनाहों को, दुःखा न दिल गरीबों का ।
 पुकारें हर दिलों की, वह सभी सुनता सुनाता है ॥
 जो मिलना दीन-बन्धु से, तो दीनों को बना अपना ।
 आनन्दमय दीन-बन्धु है, भक्त वत्सल कहाता है ॥

भजन २२

हे भगवान मन के मन्दिर में, हम तेरी ही ज्योति जलाते हैं ।
 तुझको ही अपना इष्ट समझ, चरणों में शीश झुकाते हैं ॥

संसार समुद्र में भगवन, दूरी सी ज्ञात हमारी है ।
 मझदार भी है, तूफान भी है, केवल इक आस तुम्हारी है ॥
 इक तेरे भरोसे पर भगवन, नैया को खेते जाते हैं ।
 इस जगत में प्रीतम मेरा, अब तेरे बिना और कोई नहीं ॥
 मैं भूली भटकी इधर उधर, तेरे बिना कोई ठौर नहीं ।
 बेगाने भी बनते अपने, जब तुमको हम अपनाते हैं ।
 धनवान हुए कंगाल से हम, जब जोड़ लिया तुम से नाता ।
 बन्धु भी हमारे हो तुमहीं, तुमही हो पिता तुमही माता ॥
 फिर और की चाह रहे किसकी, जब तुमसे नेह लगाते हैं ।
 ऋषियों ने शरण तुम्हारी ली, वेदों ने तेरा गान किया ॥
 पाया न किसी ने पार तेरा, जिसने भी तेरा ध्यान किया ॥
 नत मस्तक होकर 'चन्द्र प्रभु' तेरी ही महिमा गाते हैं ॥

भजन २३

तर्ज—बहारों फूल बरसाओ

- दुःखदाई होंगे भोग सभी, जो ईश्वर को बिसरायेगा ।
 विषयों की गिर खाई में, चोटों पर चोटें खायेगा ।
 १—संतों की बातें झूठ नहीं, ऋषियों की खोजें झूठ नहीं ।
 बढ़ती न करवट जीवन की, पछतायेगा-पछतायेगा ॥
 २—देख न लेखा जीवन का, तुझको ही साथ बताता हूँ ।
 आया था रोता दुनियाँ में, दुनियाँ से रोता जायेगा ॥
 ३—अपना हित चाहे देश यदि, रख ध्यान सदा हितकारी का ।
 सुन ले वरना दुःख सागर में, अपने को डूबा पायेगा ॥

भजन २४

धन्य है महिमा तेरी भगवन ना अन्त किसी ने पाया है ।
 हो निराकार भगवन मेरे ये जग साकार बनाया है ॥
 बन पर्वत पृथ्वी और तारे आकाश बनाया है तूने ।
 शुक्र, मंगल, राहू, केतु का कैसा ये चक्र चलाया है ॥ धन्य है —
 पत्ता-पत्ता डाली-डाली सब जंगल की ये हरियाली ।
 इन रंग बिरंगे फूलों में तू ही भगवान समाया है ॥ धन्य है —

Digitized by Arya Sama Foundation, Gangotri
 ना काशी में, ना मथुरा में, ना हरिद्वार में रहते हो ।
 ऋषियों ने जगत पिता ढूँढा, मन मन्दिर में ही पाया है । धन्य है—
 आये हैं प्रभु हम शरण तेरी हम दीनों का उद्धार करो ।
 इस लाल ने मूर्ख बनकर के वृथा ही जन्म गंवाया है ॥ धन्य है—

भजन २५

- मिलता है सच्चा सुख केवल भगवान तुम्हारे चरणों में ।
 मेरी विनती है पल-पल, क्षण-क्षण रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में ।
 १—रसना पै तुम्हारा नाम रहे, तेरी याद सुबह और शाम रहे ।
 दिन रात मेरा यही काम रहे, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में ॥
 २—चाहे संकट ने मुझे घेरा हो, चाहे चारों ओर अंधेरा हो ।
 पर चित्त न डग मग मेरा हो, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में ।
 ३—चाहे काँटों में मुझे चलना हो, चाहे छोड़ के देश निकलना हो ।
 चाहे अग्नि में मुझे जलना हो, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में ॥
 ४—चाहे बैरी कुल संसार बने, मेरा जीवन तुझ पर भार बने ।
 जब मौत गले का हार बने, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में ॥

भजन २६

मेरा ओ३म् जिस घर में मेहमान होगा,
 बड़ा भाग्यशाली वह इन्सान होगा ।
 जहाँ ओ३म् प्यारे का गुणगान होगा,
 वहीं स्वर्ग के सुख का सामान होगा । मेरा ओ३म्
 लगन पहले दर्शन की पैदा तो कर ले,
 उपस्थित स्वयम् आके भगवान होगा । मेरा ओ३म्
 कभी मुझसे पापी अधम की भी सुनना,
 दया करके फिर तो पशेमान होगा । मेरा ओ३म्
 मैं बेखता दासों के दासों में रखलो,
 मेरा मान स्वामी का ऐहसास होगा । मेरा ओ३म्

भजन २७

जो करता रहेगा भजन धीरे-धीरे
 तो मिल जायेगा भगवान उसे धीरे-धीरे।
 जगत में असम्भव कुछ भी नहीं है
 जो करता रहेगा यतन धीरे-धीरे।
 अगर उससे मिलने की दिल में लगन हो,
 करो शुद्ध अन्तःकरण धीरे-धीरे।
 प्रभु एक है एक उसकी है वाणी,
 करो उस पै अपना चलन धीरे-धीरे।
 चलो सत्य पथ पर प्रभु को पहचानो,
 जो कर लो उसी का मनन धीरे-धीरे।

भजन २८

जो प्राणी अमृत बेला में नित शरण प्रभु की आयेगा।
 निर्मल मन लेकर आयेगा, अमृत भर कर ले जायेगा।
 सौदा यह सबसे सुन्दर है, न किया हो जिसने कर देखे।
 ऐसा सौदा करने वाला घाटा न कदापि खायेगा ॥
 यह सागर है जिस सागर से सन्तों ने मोती पाये हैं।
 जो इस सागर में कूदेगा, डुबकी में मोती पायेगा ॥
 दुनियादारी भी चमकेगी, विश्वास करेंगे साथी भी।
 वह जो कुछ जिससे कह देगा, फिर वोही कर दिखलायेगा ॥
 अमृत बेला में देश सदा, जो शरण प्रभु की आयेगा।
 दोनों ही लोक बन जायेंगे, जो मार्ग यही अपनायेगा।

भजन २९

आती है कथा उपनिषदों में हम क्या हैं ये बतलाया है।
 यमराज से पूछने नचिकेता, एक बात जरूरी आया है ॥
 पूछ नचिकेता ने गुरुवर मैं नहीं आत्मा को समझा।
 सब नर नारी सुनलो इसको, यमराज ने जो बतलाया है ॥
 रथ रूपी मिला शरीर हमें, और आत्मा इसका स्वामी है।

मन है लगाम सारथी बन कर बुद्धि ने इसे खिलाया है ॥
 रथ के घोड़े इन्द्रियाँ हैं ये, और विषय विकार ही सड़कें हैं ॥
 बुद्धि से काम न लेता जो, वृथा ही जन्म गंवाया है ॥
 बुद्धि न ठिकाने हो जिसकी, मन चंचल जिसका रहता है ॥
 उसने शरीर की गाड़ी को पापों के गड्ढे में गिराया है ॥
 मन की लगाम जब हाथ में हो, और बुद्धि जिसकी साथ में हो ॥
 नन्दलाल उसी ने आत्मा को, संसार में शुद्ध बनाया है ॥

भजन ३०

मधुर ओ३म् का जप किये जा, किये जा ॥
 तू आधार उसका लिये जा, लिये जा ॥
 सदा अन्न भूखों को, नंगों को कपड़ा ॥
 जहाँ तक बने तू दिये जा, दिये जा ॥
 घृणा द्वेष अभिमान से मानवों के ॥
 हृदय फट रहे तू सिये जा सिये जा ॥
 धरा धाम धन जायेंगे, कुछ न संग में ॥
 तू धन धर्म संग में जिए जा लिए जा ॥
 सरस संयमी स्वाधीन बन कर ॥
 तू सौ वर्ष जग में लिये जा, जिये जा ॥
 प्रकाशीय ! चढ़ के कभी जो न उतरे ॥
 वही प्रेम प्याला पिये जा, पिये जा ॥

भजन ३१

ओ३म् महिमा...

केवल एक ओ३म् नाम सबका सहारा है,
 ओ३म् मुझे प्यारा है, ओ३म् मुझे प्यारा है ॥
 १—ओ३म् ने रचाया है सारे संसार को,
 बाग बगीचे और गुले गुलजार को ॥
 ऋषि-मुनि योगियों ने ओ३म् को उचारा है ॥ ओ३म्—
 २—पत्ते-पत्ते, डाली-डाली सब में समाया है,
 कोई जगह खाली नहीं, वेदों ने बताया है ॥
 ओ३म् ने ही वेड़ा पार सबका खलाया है ॥ ओ३म्—

- ३—हर एक प्राणी को सुख वो पहुँचाता है,
कर्म अनुसार फल देता विधाता है।
कोई पुल फल भोगने से करे न किनारा है ॥ ओ३म्—
- ४—विश्व प्रेमी ओ३म् को मन में रमाते जाओ,
अर्थ को विचार शुभ कर्म कमाते जाओ।
दुःखी वो रहेगा जिसने ओ३म् को विसारा है ॥ ओ३म्—

भजन ३२

मुझमें ओ३म् तुमझे ओ३म् सबमें ओ३म् समाया।
करलो सबसे प्यार जगत में कोई नहीं पराया ॥
जितने हैं संसार के प्राणी, सबमें हैं एक ज्योति।
एक बाग के फूल हैं हम सब एक माला के मोती ॥
एक पिता के पुत्र हैं सारे, एक हमारी माता।
करलो सबसे प्यार जगत में, कोई नहीं पराया ॥ मुझमें—
दाना पानी देने वाला, एक हमारा दाता।
ना जाने किस मूर्ख ने यह लड़ना हमें सिखाया,
ऊँच-नीच और जाति-पाँति की दीवारों को तोड़ा।
बदला जमाना तुम भी बदलो बुरी आदतें छोड़ो ॥
बुरी आदतें छोड़ो, प्रभु से नाता जोड़ो।
जागो और जगाओ सबको समय है ऐसा आया।
समय है ऐसा आया, करलो सबसे प्यार जगत में
कोई नहीं पराया ॥ मुझमें—

भजन ३३

ओ३म् जपो...

ओ३म् जपो सब प्राणी मिलकर ओ३म् जपो।
सफल बने जिन्दगानी मिलकर ओ३म् जपो ॥
ओ३म् नाम है सबसे न्यारा, सबसे उत्तम सबसे न्यारा।
कोई न जिसकी सानी, मिल कर ओ३म् जपो ॥ ओ३म्—
छठ-भाट वाली अन्तर्यामी, सबका मालिक सबका स्वामी।
प्रियतम दिलवर जानी, मिलकर ओ३म् जपो ॥ ओ३म्—

जिसने सारा जगत बनाया, यह धरती आकाश सजाया ।
 रचे आग और पानी मिलकर । ओ३म् जपो । ओ३म्-
 कष्ट-विनाशक और सुखदायक, रक्षक पालक ।
 परम सहायक, धन, बल, यश का दानी, मिलकर ओ३म् जपो ओ३म्-
 पृथ्वी सूरज, चाँद, सितारे, ऋषि मुनि योगीजन सारे ।
 जपते ज्ञानी ध्यानी मिलकर ओ३म् जपो, ओ३म् -
 न कोई लगता पैसा धेला, न कोई मुश्किल, झमेला
 न ही बड़ी "पथिक उदासीनी" मिलकर ओ३म् जपो, ओ३म् -

भजन ३४

मेरे देश की बहनों तुमको देख रही दुनिया सारी ।
 हर घर को तुम स्वर्ग बना दो, हर आँगन को फुलवारी ॥
 तुम उस देश में जन्मी हो जिस देश में जन्मी थी सीता ।
 तुम उस देश की बेटी हो जिस देश में गूँज रही गीता ।
 कभी भूलकर भी न लगाना आँचल को तुम चिनगारी ॥
 ये न भूलना जहाँ रहे फूल वहाँ पर काँटे भी ।
 है तूफान जहाँ पर छाये वहाँ पर सन्नाटे भी ॥
 तुम इस जग में हंस-हंस जीना, कभी न करना मनमानी ।
 देश कहीं पथ भूल न जाना, झूठे हास-विलासों में ॥
 करना ऐसे काम, तुम्हारे नाम रहें इतिहासों में ।
 सावधान रहना बहनों, आ गई तुम्हारी भी बारी ॥

भजन ३५

कर्म छोटे तो ईश्वर के भजन गाने से क्या होगा ।
 किया परहेज कुछ भी न दवा खाने से क्या होगा ॥
 समय पर एक ही ठोकर बदल देती है जीवन को ।
 जो ठोकर से ना समझे तो समझाने से क्या होगा ॥
 समय बीता हुआ हरगिज कभी न हाथ आएगा ।
 लिया चुग खेत चिड़ियों ने तो पछताने से क्या होगा ॥
 मुसीबत तो दले प्यदानगी के ही शपेहों से ॥
 मुकद्दर पर भरोसा करके सो जाने से क्या होगा ॥

मुट्टी बांध आया था तो खाली हाथ जाना है।

‘पथिक मालिक करोड़ों का’ कहलाने से क्या होगा।

भजन ३६

अब सौंप दिया इस जीवन का, सब भार तुम्हारे हाथों में ।
अब जीत तुम्हारे हाथों में, और हार तुम्हारे हाथों में ॥
मेरा निश्चय है बस एक यही, एक बार तुम्हें पा जाऊँ मैं ।
अर्पण कर दूँ जगती भर का, सब प्यार तुम्हारे हाथों में ॥
जब-जब संसार का कैदी बन, दरबार में तेरे आऊँ मैं ।
मेरे कर्मों का हो निर्णय, भगवान तुम्हारे हाथों में ॥
यदि जग में रहें इस विधि से, इस पार रहूँ उस पार रहूँ ।
मम जीवन नौका की होवे, पतवार तुम्हारे हाथों में ॥
मुझमें तुझमें बस भेद यही, मैं नर हूँ तू नारायण है ।
मैं हूँ संसार के हाथों में, संसार तुम्हारे हाथों में ॥

भजन ३७

- १—सुख चाहे यदि नर जीवन का, जप ले प्रभु नाम प्रमाद न कर ।
है वही सुमरने योग्य सखा, तू और किसी को याद न कर ॥
- २—अस्थिर हैं जग में ठाठ सभी, यदि बिछड़ गये अचरज ही क्या ।
हो लोभ मोह के वशीभूत, सिर धुनकर शोक विषाद न कर ।
- ३—धन माल अपार बटोर भले, पर इतना ध्यान अवश्य रहे ।
अपना घर बार बसाने को, औरों का घर बरबाद न कर ॥
- ४—पर निन्दा को सुनकर प्रकाश, आदर्श बना निज जीवन को ।
सत ज्ञान प्राप्त कर सज्जन से, दुर्जन से व्यर्थ विवाद न कर ॥

भजन ३८

जगत में उनकी मिटी है चिन्ता, जो तेरे चरणों में आ गया है ।
वही जगत में हरे भरे हैं, जो तेरे चरणों में आ गया है ॥
न तुझको पाया फकीर बनकर, न तुझको पाया वजीर बनकर ।
वही परमपद को आ गये हैं, जो तेरे चरणों में आ गये हैं ।
न तुझको पाया किसी ने बल से, न तुझको पाया किसी ने छल से ।

उसी को दर्शन हुए हैं तेरे, जो तेरे चरणों में आ गये हैं ॥
 किसी ने जग में करी बुराई, किसी ने जग में करी भलाई ।
 वही सुमार्ग पर चल पड़े हैं, जो तेरे चरणों में आ गये हैं ॥

भाजन ३९

- १—हम हैं भारत माता के लाल, ईश्वर हमको बलवान बना ।
 विद्या का देकर दान हमें, विद्वान बना, विद्वान बना ॥
 दो काल करें सन्ध्या व हवन, वेदों से प्यार हमारा हो ।
 अच्छी संगत से ईश हमें, गुणवान बना, गुणवान बना ॥
- २—माता व पिता के सेवक हों, गुरु अपने का हम मान करें ।
 मीठा बोलें और सत्य कहें, पापों से हमें भगवान बचा ॥
- ३—विद्या से प्रेम हमारा हो, ब्रह्मचारी हों, व्रतधारी हों ।
 आपस में प्रेम करें सारे, प्रीति के हमको पाठ पढ़ा ॥
- ४—भारत के बच्चे-बच्चे में, भीम अर्जुन जैसा बल होवे ।
 अभिमन्यु और हकीकत की, भक्ति का हमको दान दिला ॥
- ५—हों दयानन्द के सैनिक हम, वेदों का हम प्रचार करें ।
 नन्दलाल देश के सेवक हों, भारत से दें अज्ञान मिटा ।
 दुनियाँ में दो चीजें बहुत कम पाई जाती हैं,
 एक तो धर्म की कमाई और दूसरे सच्चे दोस्त उपनिषद् ।

भजन ४०

- १—गौ माता के उपकार हैं जो, नहीं गिने गिनाये जाते हैं ।
 लाखों प्राणी इस दुनियाँ में, गौ दूध से पाले जाते हैं ॥
 गौ माता का दूध जो है भाई, यह इक अकसीर दवाई है ।
 हर रोग में काम यह आई है, सब डाक्टर वैद्य बताते हैं ॥
- २—जो माखन गौ का खाता है, बल अर्जुन भीम का पाता है ।
 जिस ओर दिमाग लगाता है, सब काम सफल हो जाते हैं ॥
- ३—इसलिए कृष्ण गोपाल बने, कर सेवा मालामाल बने ।
 देखो कृष्ण लाल बनने लगे, लो गोपाल में फलदाते हैं ॥

४—गौ भक्त दयानन्द आए थे, गौ करुणा निधि बनाए थे ।

सब 'देश' को भेद बताये थे, जो आज सामने आते हैं ॥

कष्ट में पड़े शत्रु की भी जो सहायता करता है, और निर अभिमान है, वही दयालु है ।

भजन ४१

१—कर ओ३म् नाम से प्यार, जगत में कोई नहीं अपना ।

जब्र तक आती जाती स्वासा, तब तक दुनियाँ बीच तमाशा ।

जिस दिन टूटे इसका तार, डालकर ले जाते कफना ॥

२—जिसको समझे था तू मेरा, उसने फूंक दिया तन तेरा ।

ऐसा इस जग का व्यवहार, समझ ज्यों नींद बीच सपना ॥

३—मत कर इस जीवन में भाल, ये मानव तन बहुत अमूल्य ।

इसको मत करना बेकार, लगा कर आलस में अपना ॥

४—गर तू फेर मनुष्य तन चाहे, क्यों ना प्रभु से प्रीति लगाये ।

राघव हो जाये बेड़ा पार, प्रेम से ओ३म् नाम जपना ॥

भजन ४२

जीवन है संग्राम बन्दे जीवन है संग्राम,

क्यों आया था, क्यों रोता है, जीवन के मैदान ।

ले हिम्मत से काम बन्दे, जीवन हैं संग्राम ॥१॥

सर्दी, गर्मी, सूखा, वर्षा रैन दिना का ताँता ।

इक आता इक जाता बन्दे, ले हिम्मत से काम ॥२॥

फैंक खिलाड़ी फिर से पासा, जब तक साँसा तब तक आशा ।

ले हिम्मत से काम बन्दे, जीवन है संग्राम वन्दे ॥३॥

भजन ४३

ले ईश्वर का नाम जीवन सफल बना ।

रोज सबरे शाम जीवन सफल बना ॥ टेक

प्रेम प्रीति से भक्ति कर ले, दया धरम भव सागर तर ले ।

सच्चे सुख का धाम वही है, बिगड़े बनादे काम वही है ॥

जीला जलित जलाम जीवाम

पल-पल बीती जाए उमरिया, छोड़ कपट छल प्रेम नगरिया ।

CC-0. In Public Domain. Panini Karanji

आशा और विश्वास वही है, हरदम तेरे पास वही है,
 ऋषियों का पैगाम वही है ॥जीवन-
 मन मन्दिर में ज्योति जला ले, प्रेम प्यार की गंग बहा ले ।
 अपने मन का मैल मिटा ले, कुछ तो जग में सुयश कमा ले,
 तज दे कपट तमाम ॥जीवन-
 प्राणी मात्र से प्रेम किया कर, पीड़ित जन को शरण दिया कर ।
 जग का तू उपकार किए जा, आनन्द से और सुख से जिये जा,
 गाता चल अभियान ॥ जीवन-

भजन ४४

नाम जपन क्यों छोड़ दिया, ई नाम जपन क्यों छोड़ दिया ।
 झूठ न छोड़ा क्रोध न छोड़ा, सत्य वचन क्यों छोड़ दिया ॥
 झूठे जग में दिल ललचा कर, असल वतन क्यों छोड़ दिया ।
 भाई छोड़ दिया ॥ नाम-
 हुँडी को तू खूब सम्भाला, लाल रतन क्यों छोड़ दिया भाई ।
 छोड़ दिया । नाम-
 जिस सिमरन से तू अति सुख पाये, सो सिमरन क्यों छोड़
 दिया भाई छोड़ दिया । नाम-
 खाली इक भगवान भरोसे, तन मन धन क्यों छोड़ दिया भाई
 छोड़ दिया । नाम-

भजन ४५

जिसे हर घड़ी प्रभु का ध्यान होगा ।
 बड़ा भाग्यशाली वह इन्सान होगा ॥
 जिसे होगा विश्वास परमात्मा का ।
 उसी पर प्रभु बस मेहरबान होगा ॥१॥
 खुला ही रहेगा स्वर्ग का द्वार उसको ।
 धर्म देश जाति पर कुर्बान होगा ॥२॥
 गरीबों की रक्षा करेगा जो बन्दा ।
 वही बस बड़ा जग में इन्सान होगा ॥३॥
 जो सबका चाहता हो जगत् में ।
 जहाँ भी रहे उसका सम्मान होगा ॥४॥

भजन ४६

जो दिल से मेरा नाम गाता रहेगा ।
 तो मुझको भी तू याद आता रहेगा ॥
 नहीं खत्म होंगे यह दुनिया के धन्धे ।
 तू कब तक यहाँ दिल लगाता रहेगा ॥
 यह है ज्ञान की बूटी ऐसी मुजरब ।
 अगर ध्यान से इसको खाता रहेगा ॥
 तो आँखों का, कानों का, बुद्धि का, मन का ।
 मेरी बहिनों सब रोग जाता रहेगा ॥
 तो मुमकिन नहीं तुमको मैं भूल जाऊँ ।
 जो निर्भय तू मुझको मनाता रहेगा ॥

भजन ४७

सदा ओ३म् के गीत गाना गवाना,
 लगा ओ३म् से प्रीति अपना बनाना ।
 वही ओ३म् है विश्व का जन्मदाता,
 उसी ओ३म् से विश्व आनन्द पाता ।
 अविद्या में फँसकर न उसको भुलाना ॥ सदा ओ३म् -
 जप तप ये सेवा हैं शुभ कर्म प्यारे ।
 प्रभु मिलन के साधन हैं सारे ।
 इसी वास्ते दुःख दुःखी के मिटाना ॥ सदा ओ३म्-
 यही मार्ग है मोक्ष का तू चला चल ।
 बड़ी दूर है और मुश्किल है मंजिल ।
 न करना कभी आजकल का बहाना ॥ सदा ओ३म्-
 अनेकों चले जा रहे हैं बटोही ।
 मगर पहुँचता है वहाँ कोई-कोई ।
 जिसे देव देता है अपना खजाना ॥ सदा ओ३म्-

भजन ४८

मन को साफ बनाकर, ओ मानव ।
 आत्मोद्धार कर लेना, ईश्वर से प्यार कर लेना ॥
 देन चाहे जो प्रभु मिलन को, कर संध्या प्रातः शाम,
 मन मन्दिर में ईश मिलेंगे ये ही निश्चय जान
 हाँ ये ही निश्चय जान, फिर शरण प्रभु की आकर, ओ मानव ।
 बड़े भाग्य से नर तन पाया, लक्ष्य न जाना भूल,
 त्रेद का दीपक हाथ में लेकर करना तम को दूर, हो करना तम को दूर ।
 जीवन यज्ञ रूप बनाकर, ओ मानव । आत्मोद्धार कर
 जीवन सफल बना ले कुछ कर ले पर उपकार,
 शुभ कर्मों से ही होता है, जीवन का उद्धार, हो जीवन का उद्धार ।
 फिर कर्म तू नेक किया कर ओ मानव । आत्मोद्धार कर
 सूर्य, चाँद, पृथ्वी, नभ, तारे अद्भुत है विस्तार,
 नियमित रूप से देखो कैसे रहता यह संसार हाँ रहता यह संसार, ।
 अपना कर्तव्य निभाकर ओ मानव । आत्मोद्धार कर

भजन ४९

तू तो बना नहीं इन्सान, कैसे मिले तुझे भगवान ।
 कीनी नहीं अपनी पहचान, कैसे तुझे मिले भगवान ॥
 भीतर भरा ईर्ष्याद्वेष, कर ना पापचरण हमेश ।
 हरदम परनिन्दा का ध्यान, कैसे मिले तुझे भगवान ॥ तू तो-
 शक्ति धन विद्या तो पाई, पूँजी उल्टी और लगाई ।
 भूला निर्मल वैदिक ज्ञान, कैसे तुझे मिले भगवान ॥ तू तो-
 पूजे कब्र, ईंट पाषाण, इसका भला नहीं परिणाम ।
 खोया गौरव स्वाभिमान, कैसे तुझे मिले भगवान ॥ तू तो-
 जो है व्यापक और अविनाशी, खोजे उसको मक्का काशी ।
 भटके दर-दर हो हैरान, कैसे मिले तुझे भगवान ॥ तू तो-
 सच्चा सेवा धर्म भुलाया, ईश्वर आज्ञा को ठुकराया ।
 झूठा मिथ्या किया अभिमान, कैसे मिले तुझे भगवान ॥ तू तो-
 अमुक भटके में तिष्ठ भगवान् जलाने को तूने संभाला ।
 हो देश ऋषि संतान, कैसे मिले तुझे भगवान ॥ तू तो-

भजन ५०

मेरे देवता मुझको देना सहारा ।
 कहीं छूट जाये न दामन तुम्हारा ।
 तेरे रास्ते से हटाती है दुनिया ।
 इशारे से मुझको बुलाती है दुनिया ।
 मैं देखूँ न दुनियाँ का झूठा इशारा ॥ कहीं-
 सिवा तेरे मन में समाए न कोई ।
 लगन का यह दीपक बुझाए न कोई ।
 तू ही मेरी नैया तू ही है किनारा ॥ कहीं-
 तेरा गान हरदम गाती रहूँ मैं ।
 सुबह शाम तुझको ध्याती रहूँ मैं ।
 तेरा गान मुझको है प्राणों से प्यारा ॥ कहीं-
 तेरी राह में मन ये भटक रहा है ।
 पग-पग ठोकर ये खा रहा है ।
 करो अब कृपा यह फिरे न आवारा ॥ कहीं-
 तेरी ज्योति से जगमगाती है दुनियाँ ।
 तेरी गति से गति पाती है दुनियाँ ।
 जगती की नैया का खेवन हारा ॥ कहीं-

भजन ५१

प्रेम हो तो प्रभु भजन से प्रेम होना चाहिए ।
 जो बने विषयों के भोगी, उनको रोना चाहिए ॥
 दिन बिताया काम और आराम से तुमने सदा ।
 रात को सुमिरन प्रभु का, करके सोना चाहिए ॥
 बीज बोकर बाग के फल खाये हैं तुमने सदा ।
 वास्ते परलोक के भी, कुछ तो होना चाहिए ।
 मखमली गद्दों पर सोए हो, यहाँ आराम से ।
 सफर लम्बी के लिए, कुछ तो बिछौना चाहिए ॥
 हृदय में व्यापक हैं प्रभु, पर प्रेम बिन मिलते नहीं ।
 दूध से माखन जो चाहो, तो बिलोना चाहिए ॥

भजन ५२

मैंने ली है प्रभो इक तुम्हारी शरण,
 हे पिता और कोई सहारा नहीं ॥
 पतित पावन प्रभु आसरा दो हमें,
 आसरा और कोई हमारा नहीं ॥ १ ॥
 न तो बुद्धि न विद्या न भक्ति का बल,
 आत्मा पर चढ़ा पाप कर्मों का मल।
 बिना तुम्हारी दया के न सकते संभल,
 तुमने किस-किस को स्वामी उबारना नहीं ॥ २ ॥
 माया मोह वश हुए ऐसे संसार में,
 फँस गए काम क्रोध और अहंकार में।
 डोले नैया हमारी मझदार में,
 नजर आता है कोई किनारा नहीं ॥ ३ ॥
 है अविद्या यहाँ ऐसी छाई हुई,
 सब धर्म और कर्म की सफाई हुई।
 आशा तुमसे है ईश्वर लगाई हुई,
 इस द्वारे से बेहतर है द्वारा नहीं ॥ ४ ॥
 वेद पाठी न यहाँ ब्रह्म ज्ञानी रहे,
 वीर योद्धा न क्षत्री लासानी रहे।
 नाहीं दाता रहे नाही ज्ञानी रहे,
 अपना-अपना ही चलता गुजारा नहीं ॥ ५ ॥

भजन ५३ (जन्माष्टमी)

ऐ। मेरे कृष्ण सुदर्शन के चलाने वाले।
 कंस शिशुपाल को मिट्टी में मिलाने वाले ॥
 बात क्या काल भवन की थी बता दो हमको।
 द्वारका जाकर समुन्दर पै बसाने वाले ॥
 तेरा ही काम था दुनियाँ को दिखाया तूने।
 सत्य की जय हुई भारत को लड़ाने वाले ॥
 शीलों के सामने गांधीव

भोष्प और कर्ष से, अर्जुन को लड़ाने वाले।
Digitized by Arya Samaj Foundation, Chhatrapati Chhatra and Chhatra Angotri

अपने उस ब्रज की तू देख तो हालत आकर।
गौवें चरती थीं जहाँ, मुरली बजाने वाले ॥
यज्ञ भूमि तेरी छाछ नहीं मिलती यहाँ।
दूध और घी के ऐ, मटकों के लुटाने वाले ॥
याद क्यों न रहे अष्टमी भादों की हमें।
जन्मदिन तेरा है ऐ! भोग सिखाने वाले ॥
तू ना भारत में हो, तो भरतोदय कैसे हो।
ज्ञान के मान ए! गीता के सुनाने वाले ॥
देख भारत को जरा, आके महाभारत से।
सख्त वे दिल हैं, तुझे अपना बनाने वाले ॥

भजन ५४

महामन्त्र है यह जपा कर जपा कर,
हरी ओ३म् तत्सत, हरी ओ३म् तत्सत ॥
लगी आग लंका में, हल चल मचा था,
तो घर फिर विभीषण का क्यों कर बचा था।
लिखा था यही शब्द कुटिया में उसके,
हरी ओ३म् तत्सत, हरी ओ३म् तत्सत। महा-
वह दुष्टों ने लोहे का खम्बा तपा था,
वो निर्दोष प्रह्लाद क्यों कर बचा था।
लिखा था यही शब्द हृदय में उसके,
हरी ओ३म् तत्सत, हरी ओ३म् तत्सत। माह-
कहो नाथ भिलनी के घर क्यों गये थे,
गये थे तो फल झूठे क्यों खा लिये थे।
दिवानी भी भिलनी इसी नाम की थी,
हरी ओ३म् तत्सत, हरी ओ३म् तत्सत। महा-
हला हलाकर मीरा ने प्याला पिया था,
कहो विष से अमृत वह कैसे किया था।
दिवानी भी मीरा इसी नाम की थी,
हरी ओ३म् तत्सत, हरी ओ३म् तत्सत। महा-

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
 हरी ओ३म् की एक माला बनाओ,
 जपो रात दिन अपने मन में लगाओ।
 करो कीर्तन और यही नाम गाओ,
 हरी ओ३म् तत्सत, हरी ओ३म् तत्सत। महा—

भजन ५५

कौन जाए मथुरा कौन जाये काशी,
 इन तीर्थों से हमें क्या काम है।
 मेरे घर में ही भगवान हैं,
 उनके चरणों में ही चारों धाम हैं ॥ कौन—
 जिस घर में पिया का वास है,
 वो ही मेरे लिये कैलाश है।
 जब स्वामी हृदय के पास है,
 काहे झूठी स्वर्ग की आस है ॥ कौन—
 मेरे मन में बसे, मेरे तन में बसे,
 रहे दाता ये नाता अमर हमारा।
 जब-जब जन्में ये साथ तुम्हारा, यहाँ छूटे न हो कभी न्यारा,
 दो तारों का है ये तारा। कौन—

भजन ५६

श्री राम वन को चलने को तैयार जब हुए।
 सीता ने सिर को कदमों पै रख ये वचन कहे।
 अपने पिता की आज्ञा से अब आप वन चले।
 सेवा पति की हुक्म सो माँ बाप का मुझे।
 माता पिता के हुक्म से, मुँह कैसे मोड़ दूँ।
 पति व्रत धर्म अपना भला कैसे छोड़ दूँ।
 वनवास राह वाट में साथी रहूँगी मैं।
 चलने के वक्त राह के, काँटे चुनूँगी मैं।
 इस जिस्म जाँ से, आपकी सेवा करूँगी मैं।
 पीने के आपके लिए पानी भरूँगी मैं।
 पहले खिला के आपको पीछे खाऊँगी मैं।
 जिस दम थकींगे पर तुम्हारे दबाऊँगी मैं।

भजन ५७

ऐ रावन तू धमकी दिखाता किसे ।
 मुझे मरने का खौफ जरा भी नहीं ।
 मुझे मारेगा क्या अपनी खैर मना ।
 तुझे होनी की अपनी खबर ही नहीं ॥ ऐ रावन-
 तू जो सोने की लंका का मान करे ।
 मेरे आगे यह मिट्टी का घर भी नहीं ।
 मेरे मन का सुमेरू डिगगा नहीं ।
 मेरे दिल में किसी का डर ही नहीं ॥ ऐ रावन-
 आवे इन्द्र नरेन्द्र जो मिल के सभी ।
 क्या मजाल जो शक्ति को मेरी हरे ।
 तेरी हस्ती ही क्या है सिवा राम के ।
 मेरी नजरों में कोई बशर ही नहीं ॥ ऐ रावन-
 मेरी चाह जो थी तेरे दिल में बसी ।
 न जीत स्वयंवर में लाया मुझे ।
 वह था कौन शहर मुझे दे तो बता ।
 जहाँ स्वयंवर की पहुंची खबर ही नहीं । ऐ रावन-
 जो हुआ सो हुआ अब भी मान कहा ।
 मुझे राम से जल्दी से दे तू मिला ।
 कहे सीता वरना तू देखेगा क्या ।
 चन्द रोज में 'तेरा यह सर ही नहीं' ॥ ऐ रावन-

भजन ५८

तर्ज—बहारों फूल बरसाओ.....

- १—जो दी आज्ञा पिता माता, मैं फिर घर रह नहीं सकता ।
 करो लाखों कोई कोशिश, राज मैं कर नहीं सकता ॥ जो दी०
 २—पहन कर वस्त्र मुनियों के, उतारे राज के कपड़े ।
 किया सामान चलने का, अयोध्या बस नहीं सकता ॥ जो दी०
 ३—वो सीता नार कहती है, चलूँगी मैं भी संग वन को ।
 रहूँ घर छोड़ कर तुमको, पति व्रत धर्म रह नहीं सकता ॥ जो दी०

- ४—नहीं है काम स्त्री का, लग दहशत तुम्हें प्यारी।
 हजारों हैं असुर वन में, सती ले जा नहीं सकता ॥ जो दी-
 ५—तजूंगी प्राण मैं अपने, चलूँ या संग में वन को।
 जहाँ रघुवीर हैं संग में, वहाँ डर हो नहीं सकता ॥ जो दी०
 ६—कहें लक्ष्मण सुनो भाई, चलूँगा संग मैं वन को।
 बिना इन चरणों के देखे, मैं हरगिज जी नहीं सकता ॥ जो दी०
 ७—सखी राम चले वन को, न छोड़ा साथ भाई का।
 जहाँ मैं अब कोई ऐसा, बिरादर हो नहीं सकता ॥ जो दी०

भजन ५९

लक्ष्मण मूर्छा पर राम का विलाप

मुझे किस पर लखन भाई अकेला छोड़ जाते हो।
 नहीं लेते हो तुम करवट, न गर्दन को हिलाते हो ॥ मुझे-
 पिता ने जब पठाये थे, अवध से तीन आये थे।
 हरा सीता को रावण ने, मुझे तुम भी सताते हो। मुझे-
 पिता मरना सिया हरना, हजारों दुःख सहे वन में।
 सहा अब ये नहीं जाता, कि तुम आँखें चुराते हो ॥ मुझे-
 अयोध्या जाऊँ मैं कैसे, दिखाऊँ अपना मुँह कैसे।
 दूँ माता को क्या उत्तर, मुझे क्यों ना बताते हो ॥ मुझे-

भजन ६०

मैं प्रेम नगर की वासिन हूँ,
 मुझे प्रेम नगर को जाना है।
 नयना तरसत हरि दर्शन को,
 घनश्याम का दर्शन पाना है ॥ मैं प्रेम -
 एक हाथ में प्रेम प्याला हो,
 एक हाथ में प्रकम की माला हो,
 जोगन का रूप बनाया हो,
 अपने योगी को पाना है ॥ मैं प्रेम-
 घर द्वार से नीता तीड़ा है,

प्रेमी से नाता जोड़ा है,
 प्रेमी के गा-गा कर गाने,
 उसके रंग में रंग जाना है ॥ मैं प्रेम-
 प्रेमी की सूरत मन में हो,
 प्रेमी का प्रेम रग-रग में हो,
 प्रेमी की धूनी से रम कर,
 सुवरन मन को चमकाना है ॥ मैं प्रेम-

भजन ६१

ओ३म् की बोलो जय जयकार जी बधाई होवे,
 पहली बधाई प्यारे प्रभु को होवे ।
 जिसने रचा है यह संसार जी बधाई होवे ॥ ओ३म् -
 दूसरी बधाई बाबा दादी को होवे,
 जिनका बढ़ा है परिवार जो बधाई होवे ॥ ओ३म्-
 तीसरी बधाई माता पिता को होवे
 मन में हैं खुशियाँ हजार जी बधाई होवे ॥ ओ३म्-
 चौथी बधाई नाना नानी को होवे,
 मन में हैं खुशियाँ हजार जी बधाई होवे ॥ ओ३म्
 पाँचवी बधाई सारी सखियों को होवे,
 गाती हैं मंगलाचार जो बधाई होवे ॥ ओ३म्-
 छठी बधाई इस बालक को होवे,
 जिसका यह संस्कार जी बधाई होवे ॥ ओ३म्-

भजन ६२

नाथ हों बालक आयुष्मान,
 ज्योति है जिस कुल की बालक, कुल का हो उत्थान । नाथ-
 ब्रह्मचारी, ईश्वर विश्वासी, गुणग्राही, श्रीमान ।
 धर्म में निष्ठा सत्य वृत्ती हो वेदों का विद्वान ।
 वीर हो श्रद्धानन्द सरीखा दे निर्भयता दान ।
 पूर्व आर्य वीर जनों का, प्रतिनिधि हो भगवान ।
 मात पिता का आश्रयारी, अन्न कुंआर समान ।
 राम भरत सा परस्पर प्रेमी, उत्तम गुण की खान ।

देश के पूर्ण कलेश हरे जो, रहकर निरधिष्ठित
 ऋपि सा ऊँचा ईश भक्त हो, हरे सकल अज्ञान । नाथ-

भजन ६३ (आशीर्वाद)

हर्ष का दिवस आया है, बधाई हो, बधाई हो,
 यह शुभ सन्देश लाया है, बधाई हो, बधाई हो ।
 फले फूले यह देवी, ईश की कृपा रहे इस पर,
 यह बालक जिसने जाया है, बधाई हो, बधाई हो ।
 हो लम्बी आयु बालक की रखा है नाम अब जिसका,
 (यदि मुण्डन संस्कार हो- हुआ मुण्डन है अब जिसका)
 प्रेम से यज्ञ रचाया है, बधाई हो, बधाई हो ।
 बधाई दे रहा 'नन्द लाल' है परिवार सारे को,
 गीत गाकर सुनाया है, बधाई हो, बधाई हो ॥

भजन ६४ (सतमासा)

आ ओरी सुहागन नारी मंगल गाओरी, (७)
 जनक दुलारी की गोद भराओ री ।
 आज राम घर शुभ घड़ी आई,
 सुवर्ण कलश सिया रानी से भराओ री । आओ री-
 माँग सिंदूर शीश पै बिंदिया,
 पाँच सुहाग न सुहाग चढ़ाओ री आओ री-
 नैनों में लज्जा मुख गर्म की कान्ति,
 रूप अनूप सिया रानी पै छवायोरी । आओ री-
 माता कौशल्या बलि-बलि जाये,
 लाडली बहू मोरी होले-होले आओ री । आओ री-

भजन ६५ (जन्म दिन पर)

मेरा छोटा सा मुन्ना आँखों का तारा ।
 जीता रहे सौ साल रे, मेरी उमरिया लग जाये तुमको ॥
 पहले बरस मेरा छोटा सा मुन्ना, खेल खिलौने माँगे रे ।
 खेल खिलौने ला दूँ मैं तुझको जीता रहे सौ साल रे ॥

दूजे साल मेरा छोटा सा मुन्ना, फूलों की बगिया माँगे रे।
 फूलों की बगिया लादूँ मैं तुझको जीता रह सौ साल रे।
 तीजे बरस मेरा छोटा सा मुन्ना, सुन्दर से कपड़े माँगे रे।
 सुन्दर से कपड़े लादूँ तुझको जीता रहे सौ साल रे॥
 मेरी उमरिया लग जाये तुमको जीता रहे सौ साल रे।
 चौथे बरस मेरा छोटा सा मुन्ना, कापी व पुस्तक माँगे रे।
 कापी व पुस्तक लादूँ मैं तुझको जीता रह सौ साल रे॥
 पच्चीसवें बरस मेरा छोटा सा मुन्ना, सुन्दर दुल्हनियाँ माँगे रे।
 सुन्दर दुल्हनियाँ, लादूँ मैं तुझको जीता रहे सौ साल रे॥
 मेरी उमरिया लग जाये तुमको ॥

भजन ६६ (बरना)

सखी आज कैसी मनोहर घड़ी है।
 गले राम जयमाला सुन्दर पड़ी है।
 कोई जाके लाओ बने जी का सेहरा।
 लिये रंग भूमि में मालिन खड़ी है॥
 एक-एक सेहरे का लाख-लाख रुपया।
 इसी बात पर आज मालन अड़ी है॥
 कोई जाके लाओ बने जी का कंगना।
 लिये रंग भूमि में बम्हनी खड़ी है॥
 एक-एक कंगने का लाख-लाख रुपया।
 इसी बात पर आज बम्हनी अड़ी है॥
 कोई जाके लाओ बने जी का जोड़ा।
 लिये रंग भूमि में दर्जन खड़ी है॥
 एक-एक जोड़े का लाख-लाख रुपया।
 इसी बात पर आज दर्जन अड़ी है॥
 कोई जाके लाओ बने जी का घोड़ा।
 लिये रंग भूमि में जीजा खड़े हैं॥
 एक-एक घोड़े का लाख-लाख रुपया।
 इसी बात पर आज जीजा अडे हैं॥

भजन ६७ (बरना)

आज नये फैशन से बरना सजायेंगे ।
 घोड़ी पर चढ़ने का फैशन नहीं है ।
 बम्बई से मोटर बने की मंगाएँगे ॥
 मर्वट लगाना फैशन नहीं है ।
 नौशे के मुँह पर पाउडर लगायेंगे ॥
 कंगन बाँधना फैशन नहीं है ।
 आज नये फैशन से घड़ियाँ मंगाएँगे ॥
 नौशे सजेँगे जब फैशनेबिल ।
 आनन्द सब मिलके बैलकम गायेंगे ॥

भजन ६८ (बधावा)

देखो आज कैसी यह शुभ घड़ी आई है ।
 बोलो बधाई, बधाई, है, बधाई है ॥
 महलों के ऊपर ढोलक बजत है ।
 नीचे आँगन में बजत शहनाई है ॥ देखो-
 सारे नगर में आनन्द छाया है ।
 चन्दा गगन से रस बरसाया है ॥
 चन्दा सूरज की जोड़ी मिलाई है ॥ देखो-

भजन ६९ (बरनी)

मैं समझाऊँ ए मेरी लाडो सासू के घर जाना होगा ।
 प्रातः काल उठ प्रभु का भजन कर, सबको शीश नवाना होगा ॥
 सास ससुर की निशिदिन सेवा, सबका हुक्म बजाना होगा ।
 ननद जिठानी से प्रीति रखना, पति ही पूज्य मनाना होगा ॥
 देवर जेठ को उत्तर न दीजे, सबका बोल निभाना होगा ।
 घर के कामों में चतुराई, अच्छे पाक बनाना होगा ॥
 पत्थर ईट कभी मत पूजो, सन्ध्या चित्त लगाना होगा ।
 एक ईश्वर की भक्ति करना, पति ही में प्रेम बढ़ाना होगा ॥
 सब काम से खाली होकर, राम मन विद्या में लगाना होगा ।
 दान मुकन्द विद्या में देना, सच्चा दान कमाना होगा ॥

भजन ७० (बरनी)

आज बनो का चेहरा उदास बनो सासु के चली ।
 माँ घर छोड़ी, पिता घर छोड़े, छोड़ा कुटुम्ब परिवार ॥
 भाई भी छोड़ा बहिन भी छोड़ी, माता छोड़ी उसने खास ।
 माता के गले से लगकर भूली, अपने होश हवास ॥
 नये-नये आँगन हैं, नये-नये घर हैं, वही तुम्हारा निवास ॥

भजन ७१ (बरनी)

जरा सास के तो जाओ बन्नी, गम करने की इसमें क्या बात है ।
 यहाँ रहना था दिन दो चार का, अब वही तुम्हारा घरबार है ॥
 वहाँ तुम्हारे ससुर हैं बन्नी, जिन्हें पिताजी समझना हैं ॥
 वहाँ तुम्हारी सास हैं बन्नी, जिन्हें माता जी समझना है ।
 उनकी आज्ञा का पालन करना, उनके कहने में ही तुम रहना ।१।
 वहाँ तुम्हारे जेठ हैं बन्नी, जिन्हें बड़े भैया समझना है ।
 वहाँ तुम्हारी जिठानी है बन्नी, जिन्हें बड़ी बहन समझना है ।
 उनकी आज्ञा का पालन करना, उनके कहने में ही तुम रहना ।२।
 वहाँ तुम्हारे देवर हैं बन्नी, जिन्हें छोटे भैया समझना है ।
 वहाँ तुम्हारी ननद है बन्नी, जिन्हें छोटी बहन समझना हैं ।
 उनसे कभी न झगड़ा करना उनसे प्रेम से हिल मिल रहना ।३।
 सबसे पीछे सुन री बन्नी, सबसे पहले तुम उठना ।
 सास ससुर की सेवा करके, पति के कहने में ही तुम रहना ।४।

भजन ७२ (बरनी)

लाडली अम्बे को पूजन चली, पाँच रुपया और धजा नारियल ।
 अम्बे को भेंट करी ॥ लाडली—
 ऐसो वर मोहि दीजो भवानी, हाथ जैसे कृष्ण हरि ॥ लाडली—
 पाँचबेर परिक्रमा दीनी, अम्बे के शीश नवी ॥ लाडली—
 विनती सुनलो मेरी भवानी, कर मैं जोर खड़ी ॥ लाडली—

भजन ७३

भगवान तुम्हारी सूरत का, इस दिल में सुन्दर नक्शा है।
 मैं भिक्षुक तेरे दर का हूँ, और प्रेम हमारी भिक्षा है ॥ भग० -
 एक हाथ में प्रेम की मुरली हो, एक हाथ में चक्र सुदर्शन हो।
 इस ओर प्रेम की वर्षा हो, उस ओर भक्ति की रक्षा हो ॥ भग० -
 कभी सुख देकर के हँसा दिया, कभी दुःख देकर के रुला दिया।
 यह आपका खेल तमाशा है, और मेरी प्रेम परीक्षा है ॥ भग० -
 तू मन मेरे में बस जाना, तू नयन मेरे में रम जाना।
 तू-तू न रहे, मैं-मैं न रहूँ, बस यही तो मेरी इच्छा है ॥ भग० -

भजन ७४

दया करो तो अभी न कर दो, दयालु फिर कब दया करोगे।
 सुनाई होगी न जाने कब तक, पुकार यूँ ही सुना करोगे ॥ दया -
 भँवर में बेबस पड़ी है नैया, सहारा देखूँ तुम्हारा कब तक।
 लगा किनारे से जल्द आकर, जो देर होगी तो क्या करोगे ॥ दया -
 दया के सागर कहाते हो तुम, जनों को दुःख से छुड़ाते हो तुम।
 क्या मैं ही पापी हूँ सबसे बढ़कर, जो नाथ तुम ना क्षमा करोगे ॥ दया -

भजन ७५

ए मन मुसाफिर निकलना पड़ेगा,
 काया का घर खाली करना पड़ेगा।
 आयेगा न नोटिस जमानत न होगी,
 पल्ले में तेरी इमानत न होगी।
 कहके कहन तुझे चलना पड़ेगा। काया -
 ए हरीनन्द तू रोता फिरेगा,
 लख चौरासी में खायेगा गोता।
 फिर फिर जनम तू लेता फिरेगा। काया -
 भाड़े के क्वाटर को क्या तू सम्भाले,
 जिस दिन तुझे घर का मालिक निकाले,
 उसका किराया भी देना पड़ेगा। काया -

यम की अदालत में जब तुम चढ़ोगे,
 पूछेगा हाकिम तो तुम क्या कहोगे।
 पापों की अगनी में जलना पड़ेगा। काया—

भजन ७६ (यज्ञ की महिमा)

होता है सारे विश्व का कल्याण यज्ञ से।
 जल्दी प्रसन्न होते हैं भगवान यज्ञ से॥
 ऋषियों ने ऊँचा माना है स्थान यज्ञ का।
 जाता है देव लोक में इन्सान यज्ञ से॥ जल्दी —
 जो कुछ भी जले यज्ञ में खाते हैं अग्नि देव।
 इक-इक के बदले सौ-सौ दिलवाते हैं अग्नि देव।
 पैदा अनाज करते हैं, भगवान यज्ञ से॥ जल्दी—
 होता है कन्यादान भी इसके ही सामने।
 मिलती है राजकीर्ति, सन्तान यज्ञ से॥
 शक्ति व तेज यश भरा इस शुद्ध नाम में।
 पूजा है इसको कृष्ण, ने भगवान राम ने॥ जल्दी—
 इसका पुजारी कोई भी पराजित नहीं होता।
 इसके पुजारी को कोई भी भय नहीं होता।
 होती हैं सारी मुश्किलें आसान यज्ञ से॥ जल्दी—
 चाहे अमीर है कोई, चाहे गरीब है।
 जो नित्य यज्ञ करता है, वह खुशनसीब है।
 उपकारी मनुष्य बनता है देव यज्ञ से॥ जल्दी—

भजन ७७

- १—मुखड़ा क्या देखे दरपन में, तेरे दया धरम नहीं मन में।
 जब तक फूल रही फुलवारी, बास रही फूलन में।
 इक दिन ऐसा होगा प्राणी, खाक उड़ेगी तन में॥ मुखड़ा०
- २—कौड़ी-कौड़ी माया जोड़ी, सुरत लगी इस धन में।
 दस दरवाजे बन्द भये, जब रह गई मन की मन में॥ मुखड़ा०
- ३—नदियाँ गहरी नांव पुरानी, उत्तरी जाय एक छिन में।
 धरमी-धरमी पार उतर गये, पापी रहे अधवर में॥ मुखड़ा०

- ४—पगड़ी बांधत पेट सभारत, तैल मलत अंगन में।
कहत कबीर सुनो भाई साधो, यह क्या लड़ेंगे रन में। मुखड़ा०

भजन ७८

- १—बेला अमृत भया, आलसी सो रहा बन अभागा,
साथी सारे जगे तू न जागा ॥
झोलियाँ भर रहे भाग्य वाले, लाखों पतितों ने जीव सम्भाले।
रंक राजे बने, भक्ति रस में सने कष्ट भागा ॥साथी—
२—कर्म उत्तम थे नर तन जो पाया, आलसी बनके हीरा लुटाया।
उल्टी हो गई मति करली अपनी क्षति, है अभागा ॥साथी—
३—धर्म वेदों का न देखा भाला, बेला अमृत गया न सम्भाला।
सौदा घाटे का कर, हाथ माथे पै धर रोने लगा ॥साथी—
४—‘देश’ तूने न अब भी विचारा, सर से ऋषियों का ऋण न उतारा।
हँस का रूप था गदला पानी पिया, बन के कागा ॥साथी—

भजन ७९

- १—गिरधर तो इक न्यारा है, इक दिन न्यारा है।
मातां कहे पुत्र मेरा है, पिता कहे पुत्र मेरा है।
ना माता का ना पिता का, इक दूध पिलाने का नाता है ॥गिरधर०
२—भाई कहे जोड़ी मेरी है, बहिन कहे बन्धु मेरा है।
ना भइयों के ना बहिनों के, बस गोद खिलाने का नाता है।
३—कहत कबीरा सुनों भई साधो, यह पद तो निरवाना है।
इस पद का जो अर्थ करेगा, वही चतुर सुजाना है ॥गिरधर०

भजन ८०

- प्राणों का क्या भरोसा, ये आये या न आये।
फिर क्यों जगत के कर्ता जगदीश को भुलायें ॥ प्राणों—
घट-घट में रम रहा है, सर्वज्ञ वो प्रभु है।
छाया है जिसकी अमृत, गुणवाद क्यों न गाये ॥ प्राणों—
आये यदि मुसीबत, दिल में यह ठान लेना।
मिलती है हमका अपन दुष्कर्मों को सजाय ॥ प्राणों—

सत मार्ग पर चला दो, अपनी झलक दिखा दो।
सब दूर कर दो भगवन, गम की जो हैं घटायें ॥ प्राणों—

भजन ८१

मेरे ऋषि के बराबर जहाँ में,
कहीं देवता न कोई और होगा।
जमाने में होंगे बड़े लोग पैदा,
दयानन्द सा कोई और न होगा ॥ मेरे—
चरित्र तो देखे बहुत ऊँचे-ऊँचे,
नजर भर इधर भी जरा देख लेना,
चरित्र मिलेगा ऋषिवर का ऐसा,
न देखा सुना न कोई और होगा ॥ मेरे—
इधर तो था ब्रह्मचारी अकेला,
उधर था विरोधी सारा जमाना,
विजय पाने वाला दयानन्द जैसा,
न अन तक हुआ न कोई और होगा ॥ मेरे—
उठाके जमाने का इतिहास देखो,
तो अपनों के लाखों हितैषी मिलेंगे।
अपने दुश्मन का भी हित चाहने वाला,
ऋषि के सिवा न कोई और होगा ॥ मेरे—

भजन ८२

बतायें तुम्हें हम दयानन्द क्या थे ?
ऋषि थे, मुनि थे कोई देवता थे ॥
अंधेरे में ठोकर जो जन खा रहे थे,
वह उन गुमराहों के लिए रहनुमा थे ॥
जिन्हें हमने गलती से समझा था दुश्मन,
वही राष्ट्र नौका के नायिक महा थे ॥
उन्हीं की हिम्मत बचाते अगर ना,
निशां हिन्दुओं के मिटे जा रहे थे ॥

निभाया था दीक्षा के वृत्त को अनूठा,
वृजानन्द के शिष्य प्यारे महा थे।
गरज कोई माने न माने मुसाफिर।
दयानन्द दर्द वतन की दवा थे॥

भजन ८३

तू है सच्चा पिता सारे संसार का ओ३म् प्यारा तू ही है रक्षक हमारा।
चाँद सूरज सितारे बनाये, पृथ्वी आकाश पर्वत बनाये,
अन्त पाया नहीं छोर पाया नहीं पारवारा तू ही है रक्षक हमारा॥तू ही—
पक्षीगण राग सुन्दर हैं गाते, जीव जन्तु भी सिर हैं झुकाते।
उसको ही सुख मिला, तेरी राह पर चला जो प्यारा॥तू ही—
पाप पाखण्ड हमसे छुड़ाओ, वेद मार्ग पर हमको चलाओ।
लगे भक्ति में मन करे सन्ध्या हवन जगत सारा॥तू ही—
अपनी भक्ति में मन को लगाना, कष्ट सारे हमारे मिटाना।
दीन दुखियों का तू ही सहारा।तू ही—

भजन ८४

आज मिल सब गीत गाओ उस प्रभु के धन्यवाद।
जिसका यश नित गाते हैं गन्धर्व गुणीजन धन्यवाद॥
मन्दिरों में कन्दरों में पर्वतों के शिखर पर।
देते हैं लगातार सौ-सौ वार मुनिवर धन्यवाद॥ आज—
करते हैं जंगल में मंगल पक्षीगण हर शाख पर।
पाते हैं आनन्द मिल गाते हैं स्वर भर धन्यवाद॥ आज—
कुए में तालाब में, सिन्धु की गहरी धार में।
प्रेम रस में तृप्त हो करते हैं जलचर धन्यवाद॥ आज—
शादियों में जलसयों में यज्ञ और उत्सव के आदि।
मीठे स्वर से चाहिये करें नर नारी सब धन्यवाद॥ आज—
गान कर 'अमीचन्द' भजनानन्द ईश्वर की स्तुति।
ध्यान धर सुनते हैं श्रोता, कान धर-धर धन्यवाद॥ आज—

भजन ८५ (मंगल कामना)

- सदा फूलता फलता भगवन यह याजक परिवार रहे ।
 रहे प्यार जो किसी से इनका सदा आपसे प्यार रहे ॥
- १— मिथ्या कर अभिमान कभी न जीवन का अपमान करें ।
 देवजनों की सेवा करके, वेदामृत का पान करें ।
 प्रभु आपकी आज्ञा पालन करता हर नर नार रहे ॥
- २— मिले सम्पदा जो भी इनको उसको माने आपकी ।
 घड़ी न आने पावे इन पर कोई भी सन्ताप की ।
 यही कामना प्रभु आपसे कर हम बारम्बार रहे ॥
- ३— दुनियादारी रहे चमकती धर्म निभाने वाले हों ।
 सेवा के सांचे में सबने जीवन अपने ढाले हों ।
 नच्चा-बच्चा परिवार का बनकर श्रवण कुमार रहे ॥
- ४— बने रहें सन्तोषी सारे, जीवन के हर काल में ।
 हाल-चाल हो कैसा इनका रहे मस्त हर हाल में ॥
 ताकि देश बसाया इनका, सुखदायी संसार रहे ॥

भजन ८६

ए दुनिया बता इससे बढ़कर फिर और हकीकत क्या होगी ।
 जाँ दे दी तलाशे हक के लिए फिर और इबादत क्या होगी ॥

यूँ तो हर रात है तारों की,
 देती है पयाम उजाले का ।
 जिससे यह जहाँ पुरनूर हुआ,
 उस रात की कीमत क्या होगी ॥

खंजर भी दिखाये अपनों ने ।
 जहरे भी पिलाई अपनों ने ।
 अपनों के ही एहसान क्या कम हैं ।
 गैरों से शिकायत क्या होगी ॥ ए दुनिया—

औरों के लिए मरने वाले ।
 मर कर भी हमेशा जीते हैं ।
 जिस मौत पै दुनिया रश्क करे ।

उस मौत की अजमत क्या होगी ॥ ए दुनिया-
कलियों के मसलने वालों से
फूलों की हिफाजत क्या होगी ॥ ए दुनिया-

भजन ८७

- १—जगत को थामने वाले, मेरी बिगड़ी बना देना।
रंगी है तूने सब दुनियाँ, मेरा चोला रंगा देना। जगत को-
२—तेरी ज्योति जगे हरजाँ, जगत के कोने-कोने में।
बुझी ज्योति मेरे मन की, प्रभु फिर से जगा देना ॥ जगत को-
३—पड़ी नैया भंवर में है, किनारा दूर है प्रीतम।
कृपा की दृष्टि से भगवन, किनारे पर लगा देना ॥ जगत को-

भजन ८८

- मेरे दाता में इतनी शक्ति है, चलता पवन रुक जाता है।
दर्शन उस ज्योति नूरानी का, जो पाता है अमर हो जाता है ॥
१—सृष्टि के रचइया रचे सृष्टि, सृष्टि में ही बहुत उदार बने।
सृष्टि में ही बहुत उदार बने, ए भगवन तेरी लीला का,
कोई भी पार न पाता है ॥ मेरे-
२—मन के अन्दर जब दर्शन हों, उस घड़ी का नजारा क्या कहिए।
इन्सान तो फिर इन्सान रहा, कोई भी पार न पाता है ॥ मेरे-
३—तेरी कुदरत का क्या कहिए, हर फूल में तेरा नाम लिखा।
जिस फूल में हाथ लगाती हूँ, वह तेरे गुणों को गाता है ॥ मेरे-
४—ये दासी भी मेरे भगवन जी, इक फूल तेरी फुलवारी का।
इसे फूल समझ कर बख्श देना, बस मन मेरा यही चाहता है ॥ मेरे०

भजन ८९

- १—छवि मोहन मुझे प्यारी दिखा देते तो क्या होता।
मेरी बिगड़ी मेरे कृष्ण बना देते तो क्या होता। छवि-
२—सुना कर बांसुरी मदहोश जिससे कर दिया भारत।
वही फिर तान मुरली की सुना देते तो क्या होता ॥ छवि-
३—फँसकर पाप में भूलें धर्म अपना और अपने का।

इन्हें कुछ आम कर गीता सुना देते तो क्या होता ॥छवि-

४—रखा कायम धर्म को जान तक दे दी हकीकत ने।

यूं ही धर्म का डंका बजा देते तो क्या होता ॥छवि-

५—बहुत दूँडा कहाँ छिपकर के बैठे हो मेरे भगवन।

ठिकाना अपने रहने का बता देते तो क्या होता ॥छवि-

६—किसी जाँ पर बने नन्द, कहीं जाकर बने साँवला।

भगत 'नासिर' को भी दर्शन दिखा देते तो क्या होता ॥छवि-

भजन ९०

तेरी याद जब से भुलाई प्रभु है, मुसीबत उसी दिन से आई प्रभु है ॥
जिन्हें मैं समझता था हूँ मेरे साथी, पता चल गया गलती खाई प्रभु है ॥
मैं बेचैन व्याकुल मुसीबत जदा हूँ, तू ही एक मेरा सहाई प्रभु है ॥
सिवा तेरे है कौन मेरी सुने जो, यह दुनियाँ मेरी आजमाई प्रभु है ॥
जो सुनता है सबकी वो मेरी सुनेगा, तेरे दर पर धुनी रमाई प्रभु है ॥
नहीं "विशन" का साथी दुनियाँ में कोई, तेरे आगे झोली फैलाई प्रभु है ॥

भजन ९१

तेरी मेहरबानी का है बोझा इतना कि मैं तो उठाने के काबिल नहीं हूँ
मैं आ तो गया हूँ मगर जानता हूँ, तेरे दर पे आने के काबिल नहीं हूँ ॥१॥
यह माना क दाता है तू कल जहाँ का मगर झोली आगे फैलाऊँ मैं कैसे।
जो पहले दिया है वही कम नहीं है, उसी को निभाने के काबिल नहीं हूँ ॥२॥
तुम्हीं ने अता की मुझे जिन्दगानी मगर तेरी महिमा मैंने न जानी।
कर्जदार तेरी दया का हूँ इतना कि कर्जा चुकाने के काबिल नहीं हूँ ॥३॥
तमन्ना यही है कि सर को झुकालू, तेरा दर्श इकबार प्रभु पर मैं पालू।
सिवा दिल के टुकड़ों के ऐमेरे दाता, मैं कुछ भी चढ़ाने के काबिल नहीं हूँ ॥४॥

भजन ९२

संभल कर कदम जिन्दगी में उठाना।

अजब है ये दुनियाँ अजब है—जमाना।

ये मगरूर को सर झुकाती है दुनियाँ,

ये मजबूर पर मुस्कराती है दुनियाँ।

Digitized by eGangotri Foundation, Chennai and eGangotri
 सिर्फ चाहती है मेरे कोई ब्रह्मना ॥ अजब है ॥१॥

गलत ये राहों पर रहती है दुनियाँ ।
 सुधा से तो गुमराह करती है दुनियाँ ।
 हैं झूठी बला को मनाना है— मुश्किल ॥ अजब है ॥२॥
 जहाँ का दर्द जिसने दिल में बसाया ।
 कि ऐसा दयालु दयानन्द—आया ।
 उसे भर के प्याले जहर के पिलाये ॥ अजब है ॥३॥
 जो पुरुषोत्तम राम अजगर यहाँ आया ।
 तो इलजाम उस राम पर भी लगाया ।
 सिया पर था तीर और उस पर है ताना ॥ अजब ॥४॥
 ये वो बाग है, बगवों को जो डांटे,
 हर एक पाखंडी की जड़ों में हैं कांटे,
 ओनादान काँटों से दामन बचाना ॥ अजब है ॥५॥
 तू सच्चा है गर वो न परवाह कर तू ।
 नहीं तो बिस्तरा गोल कर तू यहां से ।
 तू जाकर बनाले वनो में ठिकाना ॥ अजब ॥६॥

भजन ९३

मेरे भगवान मुझे ऐसा वरदान दो ।
 जिन्दगी भर तेरे गीत गाती रहूँ ॥
 लड़खड़ाने न पाये कदम ये मेरे ।
 तेरी राहों पर तन मन लुटाती रहूँ ॥ मेरे भगवान ॥१॥
 तेरे चरणों में लिपटी मैं ऐसी रहूँ ।
 मुझे दुनियाँ की कोई खबर न रहे ।
 हो तेरी मूर्ति मेरे सामने ।
 तेरे चरणों में सर को झुकाती रहूँ ॥ मेरे भगवान ॥२॥
 ये दासी द्वारे पर आही गई ।
 आपने नाम का अमृत पिलाओ मुझे ।
 तुम सदा मेरी झोली को भरते रहो ॥
 मैं तेरे द्वारे पर झोली फैलाती रहूँ ॥ मेरे भगवान ॥३॥
 मेरे द्वारे पर जाऊँ, न जाने कब तक ॥

उषा रास्तों से घेरा गुजरना न हो।
 तेरे ध्यान को तेरी याद को।
 तेरे नाम की ज्योति जलाती रहूँ ॥ मेरे भगवान ॥४॥

भजन ९४.

जिस जीवन में प्रभु भक्ति नहीं वह जीवन निष्फल कहलाता है।
 जब प्रेम न हो उस ईश्वर से वह मानुष पशु कहलाता है। जिस ॥१॥
 नादान न बन अनजान न बन कुछ होश में दाना बनजा,
 यह दुनियाँ सराये फानी है, क्यों इसमें महल बनाता है ॥ जिस० ॥२॥
 कर नेक कर्म बस यह ही धर्म, तू सबका हो सबका बनजा।
 जो सेवक बन दिखलाता है, वह परम धाम को पाता है ॥ जिस० ॥३॥
 कुछ सोच न कर उठ देख उधर जग सागर है तन नैया है।
 जो तैरता है सो डूबता है, जो डूबता है तर जाता है। जिस० ॥४॥
 कुछ ध्यान करो, कुछ दान करो, कुछ काम करो इस जीवन में,
 प्रभु भक्ति के प्रयत्न से ही यह जीवन सफल हो जाता है ॥ जिस ॥५॥

भजन ९५

नाश न कर विलास में यौवन भरी जवानियाँ।
 विषयों में पड़के ना रही राजों की राजधानियाँ ॥
 रावण बड़ा अभिमानी था लंका पै जिसको नाज था।
 आ गया गरूर में करलई वीरानियाँ ॥ नाश०
 विक्रम हरिश्चन्द्र से, राज करते थे इस देश में।
 कहाँ गये हैं राजा वो, कहाँ गई वो रानियाँ ॥ नाश०
 दुनियाँ सराये फानी है हर चीज आनी जानी है।
 भजले प्रभु के नाम को, छोड़ के सब परेशानियाँ ॥ नाश

भजन ९६

प्रभो वेद-विद्या का विस्तार कर दो।
 दुखी देश भारत का उद्धार कर दो ॥ प्रभो ॥१॥
 जमाना जागा सो रही आर्य जाति।

Digitized by eGangotri
 Kanya Maha Vidyalaya, Gangotri

जो बल के पौधे भी मुरझा चुके हैं।
 इन्हें ज्ञान अमृत से गुलजार कर दो ॥ प्रभो ॥३
 भुजाओं में दो भीम-सा बल हमारे रणों में।
 ऋषि रक्त संचार कर दो ॥ प्रभो ॥
 वचाने को भारत की नौका भंवर से।
 सदा आर्य वीरों को तैयार कर दो ॥

भजन ९७

जन्म-जन्म का दुःखिया प्राणी आया शरण तुम्हारी, भगवन—मैं आया।
 कदम—कदम पर धनघोर मुसीबत। सिर पर विपदा भारी। मैं आया ॥१
 उठी है चारो ओर से आंधी, बुझे न दीपक मेरा।
 मेरे जीवन की कुटिया में छा न जाये अंधेरा।
 तेज हवा से इसे बचाकर, करना तुम रखवाली ॥ मैं आया ॥२
 ध्रुव सी मुझको देना माटि अभिमन्यु सी शक्ति।
 कौर कर्ण सा मुझे बनाना, दुनियाँ में बलहारी ॥ मैं आया ॥३
 मेरे सारे संकट हरना, शरण पड़े की रक्षा करना।
 नुम विन मेरा इस दुनियाँ में, कोई नहीं हितकारी ॥ मैं आया ॥४

भजन ९८ राम महिमा

मेरे राम के गीत गा के तो देखो।
 रामायण की शिक्षा, सिखा के तो देखो ॥
 मेरे राम थे रोज वेदों को पढ़ते।
 सुबह शाम सन्ध्या भजन यज्ञ करते।
 ये वेदों की आज्ञा निभा के तो देखा ॥ मेरे राम के ॥१
 पितु मातु आज्ञा को दिल में बिठाया।
 वर्ष चौदह वनवास हंस के निभाया ॥
 यह आदर्श ऊँचा बना के तो देखो। मेरे राम के ॥२
 ऋषियों की सेवा में तन मन लगाया।
 तपस्वी था जीवन धर्म को निभाया।
 धर्म पर चलो और चला के तो देखो ॥ मेरे राम के ॥३
 सीता को रावण उठा लंका लाया।

श्री राम ने सीता को कष्टों में पाया ।
 जंगलों में सेना बना के तो देखो ॥ मेरे राम के ॥४
 लड़े थे लड़ाई और रावण भी हारा
 सुपात्रों की रक्षा कुपात्रों को मारा ।
 ये दुष्टों के छक्के छुड़ाके तो देखो ॥ मेरे राम के ॥५

भजन ९९

प्रभु अपनी भक्ति का वरदान देना ।
 शुद्ध जीवन बनाने का सामान देना ॥ प्रभु ॥१
 रहूँ मस्त हरदम इसी रस के अन्दर ।
 चरणों में अपने कुछ स्थान देना ॥
 इस रस को पाऊँ व बाँटू सभी में ।
 सामर्थ्य ऐसी है भगवान देना ॥ प्रभु ॥२
 पवित्र हो जिह्वा तेरे नाम जप से ।
 सभी इन्द्रियाँ ऐसी गुणवान देना ॥
 हर शै में देखू जिससे तुझे मैं । प्रभु ॥३
 हृदय का मल सब धुले, जिस मिलन से ।
 संग ऐसा पवित्र और दयावान देना ॥ प्रभु ॥४
 मैं अनभिज्ञ हूँ अपने आप से स्वामी,
 जानूँ मैं जिससे वह विज्ञान देना ॥ प्रभु ॥५
 नहीं सूझता है कुछ अन्धेरा है हरस ।
 सहारा मुझे तुम ही प्रभु अपना देना ॥ प्रभु ॥६
 चारन है केवल तुम्हारा प्रभु जी ।
 चरणों के आधार का दान देना ॥ प्रभु ॥७

भजन १०० भजन कामना

तेरी आज्ञा का पालन हो यही हो कामना मेरी ।
 बनी रहे भाव से शुद्धि यही हो भावना मेरी ॥ तेरी० ॥१
 मेरे जीवन का हो उद्देश्य परमानन्द को पाना ॥
 तेरे अनुरूप बन जाऊँ यही हो प्रार्थना मेरी ॥ तेरी ॥२
 तेरे सत् के सरोवर को यह मानस हंस बन जाय ।

Digitized by eGangotri
 तेरी ज्योति के मोती से ब्रह्मचर्यके अर्चना मेरी ॥ तेरी ॥३
 तेरे ही ज्ञान सागर में लगाऊँ रात दिन गोता ।
 मैं तुझ में ही समा जाऊँ यही हो साधना मेरी ॥ तेरी ॥४

भजन १०१

- सोये पड़े हो काहे तुम कुछ तो किया करो,
 एक ओ३म् नाम मंत्र है उसको जपा करो ॥सोये पड़े ॥१॥
- १—साधना करो नित नेम से सन्ध्या किया करो,
 मन्दिर में जाकर रोज व्याहति जपा करो ॥सोये पड़े ॥२॥
- २—यह भी न तुमसे बन सके, तो यों किया करो,
 मिथ्या वचन-को छोड़कर सच-सच कहा करो ॥सोये पड़े ॥२॥
- ३—यह भी न तुम से बन सके तो यों किया करो,
 माता पिता की प्रेम से सेवा किया करो ॥सोये पड़े ॥३॥
- ४—यह भी न अगर बन सके तो यों किया करो,
 मुख से कभी किसी की न निन्दा किया करो ॥सोये पड़े ॥४॥
- ५—जो कुछ न कर सको तो, बस इतना किया करो,
 तनमन से ओ३म् ओ३म् का सुमिरन किया करो ॥सोये पड़े ॥५॥

भजन १०२ (तर्ज बुराईयों को चेतावनी)

- प्रभु भक्ति में मन अपना, लगाना चाहिए हरदम ।
 मगन हो ओ३म् ही बस ओ३म् गाना चाहिए हरदम ॥ प्रभु ॥१॥
- २—बचो दुनियाँ के विषयों से, लगाओ, ध्यान ईश्वर से
 हमें मद मोह से मन को बचाना चाहिए हरदम ॥ प्रभु ॥२॥
- ३—करो सत्संग इच्छा से, भरो विश्वास से मन को ।
 हमें वेदों के अमृत से, नहाना चाहिए हरदम ॥ प्रभु ॥३॥
- ४—नियम यम पालना निशदिन, सदा ब्रह्मचर्य से रहना ।
 यह वेदों का कथन सुनना, सुनाना चाहिए हरदम ॥ प्रभु ॥४॥
- ५—भेला मैं कौन हूँ, किस वास्ते, आया हूँ दुनियाँ में,
 पेचीदा प्रश्न यह मन में उठाना चाहिए हरदम ॥ प्रभु ॥५॥

६—करो कर्तव्य पालन बस यही है तथ्य जीवन का।

धर्म सत्याचरण में मन अपना, लगाना चाहिए हरदम ॥ प्रभु ॥६

भजन १०३

प्रभु अमृत दे ऐसा, जितना में पान करूं,
उतना ही रहूं प्यासा प्रभु भक्ति दे ऐसी ॥ प्रभु अमृत ॥
तन मन सरस करे, और मस्त करे ऐसी ॥ प्रभु अमृत ॥
प्रभु शक्ति दे ऐसी निर्वहा प्राणी के जो काम लगे ऐसी ॥ प्रभु अमृत ॥२
प्रभु सम्पत्ति दे ऐसी, दीन दुखी जन कर जो त्राण को ऐसी ॥ प्रभु अमृत ॥ ३
प्रभु सुमति दे ऐसी पर हित चिन्तन में,
दिनरात लगे ऐसी प्रभु मनुआ दे ऐसा ज्ञान
के मोती चुन-चुन हंस बने ऐसा प्रभु ज्ञान मिले ऐसा ॥ प्रभु अमृत ॥४

भजन १०४

तुम्हीं को आनन्द धन चाहती हूँ।
जगत का मैं कोई न धन चाहती हूँ ॥ तुम्ही को ॥१॥
न रह जाये मुझमें कहीं मोह माया।
प्रभो तुममें तल्लीन मन चाहती हूँ ॥ तुम्ही को ॥२॥
वही सब करूं जो तुम चाहते हो।
मैं चाहो का अपनी दमन चाहती हूँ ॥ तुम्हीं को ॥३॥
जहाँ चित हो चंचल जगत के सुखों में।
वहीं पर मैं इसका शमन चाहती हूँ ॥ तुम्हीं को ॥४॥
मिटे जिस तरह से यह भव दुःख बन्धन।
मैं ऐसा ही साधन भजन चाहती हूँ ॥ तुम्ही को ॥५॥
नहीं दिख रहा और कोई सहारा।
पथिक मैं तुम्हारी शरण चाहती हूँ ॥ तुम्ही को ॥६॥

भजन १०५

नहीं धाम धरती न धन चाहती हूँ।

कृपा की तेरी एक कण चाहती हूँ ॥

रटे नाम तेरा वो चाहूँ मैं रटना।

सुने यश वो तेरा श्रवण चाहती हूं ॥ नहीं धाम ॥१॥
 विमल ज्ञान धारा से मस्तिष्क उर्वर।
 व श्रद्धा से भरपूर मन चाहती हूं ॥ नहीं धाम ॥२॥
 नहीं चाहना है मुझे स्वर्ण छवि की।
 मैं केवल तुम्हें प्राण धन चाहती हूं ॥ नहीं धाम ॥३॥
 प्रभु आत्मा में अलौकिक हो तेरा।
 परम ज्योति प्रत्येक क्षण चाहती हूं ॥ नहीं धाम ॥४॥

भजन १०६

मुझे भगवान वह दिल दे कि जिसमें प्यार तेरा हो।
 जहाँ वह दे जो करती हर समय इजहार तेरा हो।
 मुझे वह वख्श दे आँखें, जिन्हें हो जुस्तजू तेरी।
 कि जरें जरें में जिनको फकत दीदार तेरा हो ॥ मुझे भगवान ॥१॥
 मुझे देना सदा संगत तो देना अपने प्यारों को।
 कि जिनको हर समय, विश्वास और एतबार तेरा हो ॥ मुझे भगवान ॥२॥
 मेरा साथ जमाने में बनाना उसको है भगवान।
 दया हो जिसके दिल में और, सेवादार तेरा हो ॥ मुझे भगवान ॥३॥
 इन आँखों पे लगाती ही फिरुं में चरण रज उसकी।
 भक्त निष्काम जो करता सदा आधार तेरा हो ॥ मुझे भगवान ॥४॥
 यह प्रेमी काट ही लेगा खुशी से जिन्दगी के दिन।
 मेरे सिर पर कृपा का हाथ जब भगवान तेरा हो ॥ मुझे भगवान ॥५॥

भजन १०७ जीवन समर्पण

यह जीवन तुम्हारा तुम्हीं को है अर्पण,
 लगा दो किनारे से ऐ मेरे भगवान।
 हो करुणा के सागर दया के हो दाता।
 तुम्हीं जगके पालक तुम्हीं हो विधाता।
 ये सोया है मानव इसे तुम जगा दो ॥ लगा दो ॥१॥
 मैं पथ से गिरुं तो मुझे थाम लेना,
 दया करके सदबुद्धि देते हो रहमा।
 जो सच्चा है मारग-उसे तुम दिखा दो ॥ लगा दो ॥२॥

तुम्हारे भरोसे है जीवन की नैया ।
 लगादो किनारे ऐ मेरे खिवैया ।
 कहीं डूब जाये ना इसको बचा दो ॥लगा दो ॥३॥
 दुआ दो बड़ा होगा अहसाँ तुम्हारा ।
 भटकता ही रहता है मनुवा हमारा ॥
 इसे वश में करने की पुष्टि बता दो ॥लगा दो ॥४॥
 "कष्ट में पड़े शत्रु की भी जो सहायता करता है ।
 और निरभिमान है, वही दयालु है ।"

भजन १०८

दया कर दान भक्ति का हमें परमात्मा देना ।
 दया करना हमारी आत्मा में शुद्धता देना ॥दया कर ॥१॥
 १—हमारे ध्यान में आओ प्रभु आखों में बस जाओ ।
 हमारे दिल में आकर के परम ज्योति जगा देना ॥दया कर ॥२॥
 २—बहादो प्रेम की गंगा, दिलो में प्रेम का सागर ।
 हमें आपस में मिलजुल कर प्रभु रहना सिखा देना ॥दया कर ॥३॥
 ३—हमारा कर्म हो सेवा, हमारा धर्म हो सेवा ।
 सदा ईमान हो सेवा, व सेवक जन बना देना ॥दया कर ॥४॥
 ४—वतन के वास्ते जीना, वतन के वास्ते मरना ।
 वतन पर जां फिदा करना प्रभु हमको सिखा देना ॥दया कर ॥५॥

भजन १०९

प्रभु नाम सिमर सुखधाम, जगत में जीवन दो दिन का ।
 कौड़ी-कौड़ी माया जोड़ी, मान करे धन का ॥
 सभी छोड़ कर चला मुसाफिर बास हुआ बन का । जगत में जीवन ॥१॥
 सुन्दर काया देख लुभाया, मान करे मनका ।
 बीते श्वास बिखर गई देही ज्यों माला मन का ॥ जगत में जीवन ॥२॥
 सुन्दर नारी लगे प्यारी, दास बना मन का ।
 काले बली का लगा तमाचा भूल गया ठनका ॥ जगत में जीवन ॥३॥
 ये संसार स्वान की माया मेल पल दिन का
 ब्रह्मानन्द भजन कर बन्दे नाथ निरंजन का ॥ जगत में जीवन ॥४॥

भजन ११०

- १—पिताजी दान यह दीजे कि तेरा नाम भूलूँना।
मैं दुःख में हूँ या सुख में हूँ तेरा नाम भूलूँना ॥ पिता जी ॥१॥
- २—सिवा तेरे नहीं रक्षक, करो प्रभु आप ही कृपा।
उठत-बैठत स्वप्न जागे कभी तेरा नाम भूलूँना ॥ पिता जी ॥२॥
- ३—कोई विपयों का दीवाना, कोई धन का मस्ताना,
पिऊँ मैं प्रेम का प्याला, कभी तेरा नाम भूलूँना ॥ पिता जी ॥३॥
- ४—न हूँ बेसुध मैं खुशियों में, न धन को पाके मैं अकडू
रहूँ दिन रात आसन में कभी तेरा नाम भूलूँना। पिता जी ॥४॥
- ५—करो कृपा पिता मेरे शरण में आपड़ी,
तेरे लगालो अपने चिन्तन में कभी तेरा नाम भूलूँना। पिता जी ॥५॥

भजन १११

मुझे आसरा है, प्रभो बस तुम्हारा,
तुझे छोड़ अब कौन का लूँ सहारा।
भंवर बीच चक्कर पड़ा खा रहा हूँ,
न देखा कभी शान्ति सुख का किनारा। मुझे ॥१॥

विसिर घोर मानस भवन है ये छाया,
क्यों दूर अपनी परम ज्योति प्यारा।
नहीं तुमसा कोई सनेही हितैषी।
लिया देख मैंने ये संसार सारा ॥ मुझे ॥२॥

सुखी वही तुमरा किया, जिसने,
सुमिरन, दुःखी वो कि जिसने तुम्हें है विसारा। मुझे ॥३॥

हृदय कुंज उजड़ा हुआ फिर हरा हो,
बहादो जो तुम प्रेम की वारि धारा। मुझे ॥४॥

कहेगा तुम्हें कौन फिर करुणा सिन्धु
“प्रकाशार्य” को जो न तुमने उबारा ॥ मुझे ॥५॥

भजन ११२ (ऋषि दयानन्द)

- १—प्रभु दर्शन करने आये थे, प्रभु दर्शन करना भूल गये ।
वेदों की डगर पर चलना था, इस पथ पर चलना भूल गये ॥ वेदों की ॥१॥
- २—मानव जीवन को पाकर भी, ये उलझन हम से ना सुलझी ।
अन्तर्यामी का अन्दर ही हम ध्यान लगाना भूल गये ॥ वेदों की ॥२॥
- ३—यम नियमों के साधन प्यार अपने को निर्मल कर न सके ।
ऋषियों की भांति ज्योति से, ज्योति को मिलाना भूल गये ॥ वेदों की ॥३॥
- ४—अपनी ही अविद्या के कारण, भगवान को समझा दूर सदा ।
गुल खिले पापाचारों के, शुभ कर्म कमाना भूल गये ॥ वेदों की ॥४॥
- ५—उल्टी मतियों के मतवाले, बैठ गये अनेकों धर्मों में ।
मानव होकर के मानव में मानवता, लाना भूल गये ॥ वेदों की ॥५॥
- ६—धरती पर जितने मानव है, सब से भाई चारे का नाता है ।
हम हिंसा वादी बन बैठे, देवों का जमाना भूल गये ॥ वेदों की ॥६॥
- ७—भूले सुलझाने देश की फिर, ऋषि दयानन्द आये थे ।
ऐसे उपकारी नेता की, आज्ञा को निभाना भूल गये ॥ वेदों की ॥७॥

भजन ११३

- १—सबसे ऊँचा प्रभु का नाम ।
ऋषि मुनियों ने इसको गाया ॥
जीवन अपना सफल बनाया ।
प्रथम वेद में ओ३म् ही आया ।
जपा राम और श्याम ॥ सबसे ऊँचा ॥१॥
- २—ओ३म् नाम से सब दुःख गे ।
ओ३म् नाम से सोते जागे ॥
भक्ति भाव से यह रट लागे ।
जपे सुबह और शाम ॥ सबसे ऊँचा ॥२॥
- ३—ओम नाम से अमृत पाये ।
भव सागर से पार लगाये ॥
सभी विचारों से बच जाये ॥
अपने मन को थाम ॥ सबसे ऊँचा ॥३॥

४—ओम नाम का रस तू पीले ।
 इस दुनियाँ में सुख से जीले ।
 श्वास-श्वास से यह ही निकले ।
 खर्च न होता दाम ॥ सबसे ऊँचा ॥४॥

भजन ११४

जीवन की रुलाती घड़ियों में मिलता है तुम्हारा प्यार मुझे ।
 कुछ चाह न बाकी रहती है प्रभु आके तेरे दरबार मुझे ॥
 १—मेरे दिल के गगन पर आके कभी, जब गम की घटा छा जाती है ।
 इक पल में कहीं से तेरी दया, बन के हवा आ जाती है ।
 तुझे जग का रक्षक कहने में, फिर क्यों हो भला इनकार मुझे । जीवन ॥
 २—प्रभु दर पै तेरे आने वाला अपनी झोली भर लेता है ।
 तेरे दर से पिता मैं क्या मांगू, बिन मांगे तू सब कुछ देता है ।
 जो तेरी इच्छा हो भगवन, हरदम है वही स्वीकार मुझे । जीवन ॥
 ३—जब तक मैं पथिक दुनियाँ में रहूँ । बस एक यही मेरा काम रहे ।
 मेरे दिल में तुम्हारी याद रहे, होटो पै तुम्हारा नाम रहे ।
 तेरी ही शरण में ध्यान रहे, चाहे जन्म मुझे सौ बार मिले । जीवन ॥

भजन ११५

प्रभो सद ज्ञान मुझको दो तुम्हारे द्वार आया हूँ ।
 मेरे अभिमान से मन को, तुम्हारे पास लाया हूँ ॥
 १—रखूँ ये याद हर पल ही, तुझे संसार में रहकर ।
 मुझे सामर्थ्य यह देदो तुम्हारे पास आया हूँ ।
 प्रभो सद ज्ञान मुझ को दो, तुम्हारे द्वार आया हूँ ॥ मुझे यह ॥
 २—रखूँ मैं याद मृत्यु को, जगत व्यवहार में रहकर ।
 बुद्धि प्रभु भर दो, तुम्हारे पास आया हूँ ॥ मुझे यह ॥
 ३—जनम नर ने लिया है तो, सुनिश्चित मृत्यु भी होगी ।
 मुझे यह बोध धन दे दो तुम्हारे द्वार आया हूँ । मुझे यह ॥
 ४—सुखों का हो दुःखों का हो, चाहे विस्तार कितना भी
 तुम्हारे भूले नहीं वर दो, तुम्हारे द्वार आया हूँ । मुझे यह ॥

भजन ११६

- १—जनम तेरो बातों में बीत गयो, तैने कबहू न भजन कियो ॥
 दस वर्षों तक बचपन बीता, बीस जवान भयो ॥
 तीस वर्ष माया के पुरै, देश विदेश गयो ॥ तैने कबहू ॥
- २—चालीस वर्ष में बड़ा कबीला, मोह ममता बढ़यो सुतदारा ॥
 और धन के कारण नशदिन सोच भयो ॥ तैने कबहू ॥
- ३—सत्तर वर्ष कमर भई टेढ़ी, खाट पै आन पड़ी।
 कटु वचन बहू बेटा बोले, बूढ़ों मर ना गयो ॥ तैने कबहू ॥
- ४—ना प्रभु भक्ति ना गुरु सेवा, ना शुभ कर्म किया ॥
 कहत कवीर सुनो भाई साधो, चोला छोड़ गयो ॥ तैने कबहू ॥

भजन ११७ गृह निर्माण बधाई गीत

- १—यह सुन्दर भवन बन जाना बधाई हो बधाई हो।
 यह गृह प्रवेश करवाना बधाई हो बधाई हो ॥ यह सुन्दर ॥१
- २—कराया यज्ञ हवन उत्तम, हुआ जो वेद मन्त्रों से,
 सुगन्धित वायु। फैलाना बधाई हो बधाई हो ॥ यह सुन्दर ॥१
- ३—बनाया जो भवन सुन्दर रहे सब को यह सुखकारी।
 सभी मित्रों का यहाँ आना, बधाई हो बधाई ॥ यह सुन्दर ॥२
- ३—बनाया जो भवन सुन्दर रहे सब को यह सुखकारी।
 सभी मित्रों का यहाँ आना, बधाई हो बधाई हो ॥ यह सुन्दर ॥३
- ४—रहे आनन्द का वातावरण, प्रभु कृपा से इस घर में।
 यह उद्घाटन का करवाना, बधाई हो बधाई हो ॥ यह सुन्दर ॥४
- ५—प्रभु कृपा है अति भारी हुआ है जो भवन पूरा।
 सदा सुख शान्ति ही पाना बधाई हो बधाई हो ॥ यह सुन्दर ॥५
- ६—सदा कल्याण की वर्षा, बरसे ईश कृपा से।
 सदा ईश्वर के गुण गाना बधाई हो बधाई हो ॥ यह सुन्दर ॥६

भजन ११८

- १—अजब हैरान हूँ भगवन, तुम्हें क्योंकर रिझाऊँ मैं।
 कोई वस्तु नहीं ऐसी, जिसे सेवा में लाऊँ मैं ॥ अजब ॥१॥

- २—करूँ किस तौर आवाहन कि तुम सर्वत्र व्यापक हो ।
निरादर है बुलाने को, अगर घंटी बजाऊँ मैं ॥ अजब ॥२॥
- ३—भुजायें हैं न गर्दन है, न सीना है न पेशानी ।
तू है निरलेप नारायण, कहाँ चंदन लगाऊँ मैं । अजब ॥३॥
- ४—तुम्हीं हो मूर्ति में भी, तुम्ही व्यापक हो फूलों में ।
भला भगवान पर भगवान को क्योंकर चढ़ाऊँ मैं । अजब ॥४॥
- ५—तुम्हारी ज्योति से रोशन है, सूरज चाँद और तारे ।
महा अंधेर है तुमको, अगर दीपक दिखाऊँ मैं । अजब ॥५॥
- ६—लगाना भोग कुछ तुमको, यह एक अपमान करना है ।
खिलाता है जो सब जग को, उसे क्योंकर खिलाऊँ मैं । अजब ॥६॥
- ७—बड़े नादान हैं वे जन जो गढ़ते, आपकी मूरत
बनाते विश्व को तुम हो, तुम्हें क्योंकर बनाऊँ मैं । अजब ॥७॥

भजन ११९

- १— तेरे चरणों में आना मेरा काम है ।
मेरी बिगड़ी बनाना तेरा काम है ॥
है सुना मैंने तू तो निराधार है ।
फिर ये कैसे बना डाला संसार है ।
तेरे चरणों में ही मिलता सुखधाम है ॥ तेरे चरणों ॥१॥
- २— पत्ते-पत्ते की कतरन है न्यारी कडी ।
फूल है लाल पीले तो टहनी हरी ।
नजर आता न रंगों का गोदाम है ॥ तेरे चरणों ॥२॥
- ३— हे प्रभु इस जगत का विधाता है तू ।
सबका बन्धु पिता और माता है तू ।
तेरा हर काम भगवान निष्काम है । तेरे चरणों ॥३॥
- ४— हे प्रभु मुझको ऐसा तू वरदान दे ।
अपनी ही भक्ति दे अपना ही ध्यान दे ।
हीन बन्धु दयालु तेरा नाम है तेरे चरणों ॥४॥

भजन १२०

- १— मेरी आस यही है भगवन ।
 तुम्हें अपनी कहानी सुनाया करूं ॥
 मेरी इसमें खुशी है तुम रूठा करो ।
 मैं अकेले में तुमको मनाया करूं ॥ मेरी आस ॥१
- २— क्या चीज जो सेवा में तेरी ।
 चढ़ जाये स्वयं तुझ पर मेरी ॥
 मैं फूल बना कर दिल अपना ।
 चरणों तेरे चढ़ाया करूं ॥ मेरी आस ॥२
- ३— कोई वैश्य कहे चाहे दिवाना ।
 चाहे पागल सारा जमाना कहे ।
 तेरे चरणों की रज को चन्दन समझ ।
 माथे पै अपने लगाया करूं ॥ मेरी आस ॥३
- ४— मैं कैसे भुलादूँ तेरे नाम को ।
 अपनी पलकों में देखूँ तेरी राहों को ।
 तुम रुठे-रुठे फिरा करो ।
 मैं हरदम तुमको मनाया करूँ ॥ मेरी आस ॥४

भजन १२१

- १— अब न बनी तो फिर ना बनेगी ।
 बार-बार नहीं यह काया मिलेगी ॥
 किया न सतसंग न प्रभु गुण गाया ।
 हीरा जनम यूँ ही वृथा गंवाया ।
 जननी तुझे फिर ना जनेगी ॥ बार-बार ॥१
- २— तेरी जवानी भ्रम में भुलानी ।
 गुरु पितु मात की बात न मानी ॥
 यह नैया कैसे पार लगेगी ॥ बार-बार ॥२
- ३— सूर कूर कूर तेरी काया माटी ।
 धरनि पड़ेगी पतंग ज्यों काटी ॥
 माटी में माटी मिला के रखेगी ॥ बार-बार ॥३

भजन १२२

- १— दुनिया में आकर दुनिया के बन्दे ।
परमेश्वर को भूल न जाना ।
रखना प्रभु को याद सदा ही ।
विषयों में हरगिज मन न लगाना । परमेश्वर ॥१
- २— पापों से जीवन अपना बचाओ ।
दुःखियों की सेवा में मन को लगाओ ॥
वेद पढ़ो और पढ़ाओ ।
धर्म की राह से पग न हटाना । परमेश्वर ॥२
- ३— काम किसी के आता नहीं जो,
दुखडें किसी के मिटाता नहीं जो ।
भूखे को भोजन खिलाता नहीं जो ।
बेकार है चोला मनुष्य का पाना । परमेश्वर ॥३
- ४— अन्त समय नन्दलाल जो आये ।
नैनों से रो-रो के नीर बहाये ।
निकलेगा मुंह से तेरे हाय-हाय ।
अपना भी हो जायेगा फिर बेगाना । परमेश्वर को ॥४

भजन १२३

- १—विश्वपती जगदीश तुम ।
तेरा ही ओ३म् नाम है ॥
मस्तक छूकर प्रेम से ईश्वर तुम्हें प्रणाम है ।
सृष्टि बना के पालना दाता है तेरे हाथ में ।
करना प्रलय ही अन्त में, तेरा ही नाथ काम है । विश्वपती ॥१
- २—ऋतुयें बदल के आ रहीं, नदियाँ सिन्ध में जा रहीं ।
शाम के बाद है सुबह सुबह के बाद शाम है । विश्वपती ॥२
- ३—सूरज समय पर ढल रहा, वायु नियम से चल रहा ।
झुकता है सर ये देखकर, तेरा जो इन्तजाम है । विश्वपती ॥३
- ४—आता नहीं कहीं नजर कण-कण तू समझा रहा ।
जग में जहाँ तू तहीं ऐसा जग कोई धाम है ॥ विश्वपती ॥४

५—होता है क्या सदा, ईश्वर से दरबार में।

चलती नहीं सिफारिशें चलता न कोई दाव है। विश्वपती ॥५॥

६—तेरे पदारथ हैं प्रभु जग में सभी के वास्ते।

सब के लिये है वेद ही जिनमें तेरा पैगाम है ॥ विश्वपती ॥६॥

भजन १२४

- १— मधुर ओ३म का नाम गाकर तो देखो ।
ये चंचल बड़ा मन टिका कर तो देखो ॥
नहीं दुःख रहेगा, नहीं गम रहेगा ।
भजन मन तेरा ये उसी में रहेगा ॥
ये भक्ति जरा आजमाकर तो देखो । मधुर ॥१॥
- २— मुरादे तेरे मन की हों पूरी सारी ।
न चिन्ता रहेगी तुझे कोई भारी ॥
ये दिव्य ज्योति जला कर तो देखो ॥ मधुर ॥२॥
- ३— जमी आसमां को उसी का सहारा ।
वही बन्धु माता पिता है हमारा ।
यह चाँद सूरज निगाह से तो देखो । मधुर ॥३॥
- ४— संध्या हवन का करना न भूलो ।
यम नियमों का पालन न भूलो ॥
यह दिन रात नियम बना कर तो देखो ॥ मधुर ॥४॥
- ५— जनम और मरण के मिटेंगे झमेले ।
प्रभु खोज ऋषिवर निकले अकेले ॥
शरण में प्रभु की तुम आकर तो देखो ॥ मधुर ॥५॥

भजन १२५

- १—नाम प्रभु का बोल रे बन्दे नाम प्रभु का बोल ।
पल पल छिन-छिन बीता जाये, जीवन ये अनमोल ॥ नाम प्रभु ॥१॥
- २—कुछ भी नहीं यहाँ पर तेरा, करता फिरता मेरा-मेरा ।
ये दुनियाँ है रैन बसेरा देख ये आँखे खोल । नाम प्रभु ॥२॥
- ३—समय पड़े कोई काम न आये, सब कुछ पड़ा यहीं रह जाये ॥
इस दुनिया की चाल दुर्गामी सपना बोल की प्रेत ॥ नाम प्रभु ॥३॥

४—क्रोध लीन मन्द दूर हटा दे मन से ममता मोह भगता दे ॥ नाम प्रभु ॥४

क्षमा-दया की ज्योति जगा दे ज्ञान तराजू तोल ॥ नाम प्रभु ॥४

५—अंधकार में फिरे भटकता तुच्छ ज्ञान पर फूला फिरता,
सत्य खोज की करले वन्दे, अन्तर के पट खोल ॥ नाम प्रभु ॥५

६—प्रभु बिन टेर सुने को तेरी, रखि है शरण करे ना देरी ।
सदभावो के पुष्प चढ़ा दे, स्नेहामृत घोल ॥ नाम प्रभु ॥६

७—प्रभु चरणों में प्रीत लगा ले, महाज्योति को मन में बसा ले ।
वही तो बेड़ा पार करेंगे, बोल-बोल जय बोल ॥ नाम प्रभु ॥७

भजन १२६

१—प्रभु प्यारे से जिसका संबन्ध है ।
उसे हरदम आनन्द ही आनन्द है ॥
झूठी ममता से करके किनारा लेकर सच्चे प्रभु का सहारा ।
हुआ उसकी रजा में रजा मन्द है । उसे हरदम ॥१

२—जिसकी वाणी में कोयल की कुहक है ।
जिसकी कथनी में फूलों की महक है ॥
प्रभु ममता की जिसमें सुगन्ध है ॥ उसे हरदम ॥२

३—निन्दा चुगली न जिसको सुहाये ।
बुरी संगत की रंगत न भाये ॥
सत संग ही जिसको पसंद है ॥ उसे हरदम ॥३

४—दीन दुःखियों के दुःख को मिटाये ।
बनके सेवक भला सबका चाहे ॥
नहीं जिसको घमंड है सुहाये ।
उसे हरदम आनन्द ही, आनन्द है ॥ उसे हरदम ॥४

भजन १२७

१—जिस नर में आत्म शक्ति है, वह शीश झुकाना क्या जाने ।
जिस नर में ईश्वर-भक्ति है, वह पाप कमाना क्या जाने ॥ जिस नर में ॥१

२—मन मन्दिर में भगवान बसत, जो उसकी पूजा करता है ।
पत्थर के देवता पर जाकर वह फूल चढ़ाना क्या जाने ॥ जिस नर में ॥२

३—माँ बाप की सेवा करता है, उनके दुःखों को हरता है ।
वह मथुरा काशी हरिद्वार, वृन्दावन जगता क्या जाने ॥ जिस नर में ॥३

४—दो काल करे सन्ध्या व हवन, नित सतसंग मे जो जाता है ।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भगवान का है विश्वास जिसे दुःख में घबराना क्या जाने ॥ जिस नर में ॥४

५—जो खेला है तलवारों से, और अग्नि के अंगारों में ।

रणभूमि में जाकर पीछे, वह कदम हटाना क्या जाने ॥ जिस नर में ॥

भजन १२८

- १— पाकर नर तन जवानी में फूला फिरे,
नाम प्रभु का भुलाना गजब हो गया ॥
तेरे जीवन की अनमोल घड़ियाँ हैं जो ।
मोल माटी के आना गजब हो गया ॥ पाके नर तन ॥१
- २— खेलने कूदने में गया बाल पन ।
जवानी में प्यारा लगे माल धन ॥
नारी सुत आदि में लगाया है मन ।
फिर बुढ़ापे का आना गजब हो गया ॥ पाके नर तन ॥२
- ३— आके यम दूत जब रंगे पकड़ने लगे ।
अपने-पासे में मैं तुझको जगड़ने लगे ॥
मार कौड़ों की खाना गजब हो गया । पाके नर तन ॥३
- ४— नारी सुत धन कोई साथ जाता नहीं ।
अपना तन भी तो साथ जाता नहीं ॥
खोटी करनी का पाना गजब हो गया । पाके नर तन ॥४

भजन १२९

- १— श्री कृष्ण छोटे सुदामा बड़े थे ।
एक ही गुरु जी से दोनों पढ़े थे ॥
एक गुरु जी ने जंगल को भेजा ।
आज्ञा का पालन करके दोनों चले थे ॥ श्री कृष्ण ॥१
- २— एक दिन वनों में आँधी चली आई ।
गरजने लगा बादल बरसने लगा पानी ।
एक ही पेड़ तले दोनों खड़े थे । श्री कृष्ण ॥२
- ३— एक दिन वनों में भूख लग आई ।
खाने को गुरु जी ने चने दिये थे ।
चने सुदामा ने अकेले ही खाये ।

प्रभु जी ने पूछा तो कुछ न बताया ॥
 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

- इसी लिए सुदामा दरिदर हुये थे ॥ श्री कृष्ण ॥३
 ४— एक दिन सुदामा गोकुल में आये ।
 तंदुल की पोटली बगल में दबाये ॥
 भगवान की आँखों से आँसू बहे थे । श्री कृष्ण ॥४

भजन १३०

- १— पायो पापो जी मैंने राम रतन धन पाया ।
 वस्तु अमोलक दी मेरे सतगुरु ॥
 कृपा कर अपनायो ॥ पायो जी ॥
 २— जनम-जनम की पूंजी पाई ।
 जग में सभी खुवायो ॥ पायो जी ॥२
 ३— खरचै नहिं कोई चोर न लूटे ।
 दिन-दिन बढ़त सवायो ॥ पायो जी ॥३
 ४— सत की नाव खिवटिया सतगुरु ॥
 भव सागर तरवायो ॥ पायो जी ॥
 ५— मीरा के प्रभु गिरधर नागर ।
 हरक-हरक जस गायो ॥ पायो जी ॥५

भजन १३१—

- १—सच्चा तू करतार है, सबका पालन हार है ।
 तेरा सबको को आसरा सुखों का भंडार है ।
 नदियाँ नाले पर्वत सारे तेरी याद दिलाते हैं ।
 ऋषि मुनि और योगी सारे, तेरे ही गुण गाते हैं ।
 तेरे ही गुण गाते हैं । सच्चा तू ॥१
 २—बादल चमके बिजली चमके छम-छम ।
 वर्षा आती है छम-छम वर्षा आती है ।
 मीठी वाणी कोयल बोले यही राग सुनाती है ॥ सच्चा तू ॥ २
 ३—सतचित्त आनन्द प्रभु को, वेदों ने बतलाया है ।
 अन्त तेरा न किसी ने पाया, सुन्दर तेरी माया है ॥ सच्चा तू ॥३
 ४—शुभ कर्मों से मानव का यह सुन्दर चोला पाया है ।

सुन्दर चोला प्राप्त है विषय विकारों में फँसकर Gangotri
Digitized by Arya Sanjay Vidya Vihar

इसको दाग लगाया है, इसको दाग लगाया है ॥ सच्चा तू ॥४

५—नन्द लाल कहे श्रद्धा से चरणों में शीश झुकाते हैं।

बल बुद्धि और विद्या का हम दान आप से चाहते हैं ॥

दान आपसे चाहते हैं ॥ सच्चा तू ॥५

भजन १३२

ओ३म् बोल मेरी रसना घड़ी-घड़ी।
व्यर्थ बिताती है क्यों जीवन मुख मन्दिर में पड़ी-पड़ी ॥ ओ३म् ॥
नित्य निकाल ओ३म् नाम की श्वास-श्वास से कड़ी-कड़ी ॥ ओ३म् ॥
जाग उड़ तेरी ध्वनि सुनकर, इस काया की कड़ी-कड़ी ॥ ओ३म् ॥
बरसाये प्रभु नाम सुधा रस, बिन्दु बिन्दु से झड़ी-झड़ी ॥ ओ३म् ॥
पल-पल पर ले जाना चाहती-मौत सिरहाने खड़ी-खड़ी ॥ ओ३म् ॥

भजन १३३

प्रभु को विसार किसकी आराधना करूँ मैं आराधना करूँ मैं।
तू है कल्प तरु किसी से क्या याचना करूँ मैं।
मोती मुझे मिला जब, मानस के मानसर में।
कंकर बटोरने की, क्यों कामना करूँ मैं।
सब के परम पिता वो घट-घट में रम रहे हैं।
लघु जान क्यों किसी की अवहेलना करूँ मैं ॥
मुझ को प्रकाश प्रतिपल, आनन्द आन्तरिक है।
जग के क्षणिक सुखों की क्यों चाहना करूँ मैं ॥ प्रभु को विसार ॥

भजन १३४

प्रभु लीजे खबरिया, गरीबन की हँ गरीबन की।
सीता को रावण ले गया, अपने ही ध्यान में।
सोने की लंका जला दई, एक ही उड़ान में।
एक रह गई मढ़इया विभीषण की ॥ प्रभु ॥
भिलनी के बेरे प्रेम से सब झूठे खाये थे।
तुबुल सुदामा भक्त के हंस-हंस चबाये थे।

सारी हो गई सुदामा पुरी कंचन की प्रभु
मति भृष्ट हुई दुष्ट की द्रोपदी का खींचा चीर।
जा पार पाया चीर का निर्बल हुआ शरीर।
हँसी हो गई सभा में दुःशासन की हाँ दुःशासन की प्रभु ॥

भजन १३५

- १—परमेश्वर का कर गुण गान, वह ही है रक्षक भगवान।
ओ३म् शब्द कर जाप किया कर गायत्री का जाप किया कर।
हो जाये तेरा कल्याण ॥ परमेश्वर ॥१
- २—सतसंग में नित आया कर, जीवन सफल बनाया कर।
भक्ति रस का कर तो पान ॥ परमेश्वर ॥२
- ३—सेवा अपना लक्ष्य बना दीन दुःखी का दर्द मिटा
माया का न कर अभिमान ॥ परमेश्वर ॥३
- ४—नन्दलाल तू होश में, वेदों का मारग अपना।
अपना आप जरा पहिचान ॥ परमेश्वर ॥४

भजन १३६

- १—भगवान तुम्हारे चरणों में मैं शीश झुकाने आई हूँ।
वाणी में तनिक मिठास नहीं पर विनय सुनाने आई हूँ ॥ भगवान ॥१
- २—चरणामृत लेने को भगवन कोई पात्र मेरे पास नहीं।
इन दो नयनों के प्यालों में मैं दर्शन पाने आई हूँ ॥ भगवान ॥२
- ३—तुमसे लेकर क्या भेंट करूँ भगवान तुम्हारे चरणों में।
तुम दाता हो, मैं भिक्षुक हूँ मैं मन में बसाने आई हूँ ॥ भगवान ॥३
- ४—सेवा में कोई वस्तु नहीं, प्रभु खाली हाथ चली आई।
मैं रो-रो कर इन असुओं का इक हार चढ़ाने आई हूँ ॥ भगवान ॥४

भजन १३७

- १—भगवान हमें वो शक्ति दो हम विदुशी नारी बन जायें।
दो चार नहीं भू मण्डल में सारी की सारी बन जायें ॥ भगवान ॥१
- २—हो पवित्र पल्ला दामन का, फिर चरित्र।
ऊँचा कामन का, मुह तोड़ फाड़ दे रावण का।

फिर जनक दुलारी बन जाये ॥ भगवान ॥२
 ३—है ऊँची महिमा शिक्षा की बारात नहीं प्रतीक्षा
 को विष पीया पिता की रक्षा को,
 फिर कृष्ण कुमारी बन जाये । भगवान ॥३

भजन १३८

- १—भक्त सुदामा आये श्याम तेरे मिलने को
 शीशू न पगिया तन न जामा, अपना नाम बताये सुदामा ॥ भक्त ॥१
 नैना नीर बहाये श्याम तेरे मिलने को ॥ भक्त ॥२
 २—नंगे पैरों फटी बिवाई, चितवर चकित महल सुगराई ।
 दरिद्र भेष बनाये श्याम तेरे मिलने को ॥ भक्त ॥३
 ३—हृदय लगाय कृष्ण अति रोये, नैनो के जल से पग धोये ।
 हँसकर वचन सुनाये श्याम तेरे मिलने को ॥ भक्त ॥४
 ४—कहो मित्र क्या कहा भाभी ने, क्या सौगात पढाई भाभी ने ।
 पोटरा काँख दबाये श्याम तेरे मिलने को ॥ भक्त ॥५
 ५—तन्दुल चाब लोक इक दीना, चा चक बीच दबाय ।
 दीना रुकिमिन हाथ हलाये, श्याम तेरे मिलने को ॥ भक्त ॥६

भजन १३९

“जनकपुर में सखियों का सीताजी को बताना ॥”
 सखि री दो कुँवर सुन्दर मनोहर आज आये हैं ।
 बड़े को राम कहते हैं, लखन वो नाम छोटे का ।
 अयोध्या है वतन उनका श्री दशरथ के जाये हैं ।
 धनुष कर में लिये हैं वह गले में फूल माला है ।
 पड़े हैं कान में कुंडल मुकुट सर से लगाये हैं ।
 लगी है कोर माथे से, पड़ा है नैन में सुरमा ।
 मनोहर उनकी सूरत को, न कोई और पायेगा ।

भजन १४०

श्री राम जी का धनुष तोड़ना व सीता का विवाह ॥

CC-0. In Public Domain. Panini Kavya Mahavidyalaya Collection.

धड़ी आज की प्यारी-सी मुबारिक ।

गुलों को ये फसले बहारो मुबारिक ॥

महाराज का कौल पूरा हुआ है।
 रही कौम की लाज सारी मुबारिक॥
 सिया के पिया ने धनुष तोड़ डाला।
 हमेशा को ये याद गारी मुबारिक॥
 मुबारिक जनक नन्दिनी राम जी को।
 सिया को अवध के बिहारी मुबारिक॥

भजन १४१

- १—मुझे किस पर लखन भाई अकेला छोड़ जाते हो।
 नहीं लेते हो तुम करवट, न गरदन को हिलाते हो॥ मुझे किस॥१
- २—पिता ने जब पठाये थे अवध से तीन आये थे।
 हरा सीता को रावण ने, मुझे तुम भी सताते हो॥ मुझे किस॥२
- ३—पिता मरना सिया हरना, हजारों दुःख सहे बन में।
 सहा अब ये नहीं जाता कि तुम आँखें चुराते हो॥ मुझे किस॥३
- ४—अयोध्या जाऊँ मैं कैसे दिखाऊँ अपना मुँह कैसे।
 दूँ माता को क्या उत्तर मुझे क्यों न बताते हो॥ मुझे किस॥४

भजन १४२

- १— प्रभु मेरे जीवन का उद्धार कर दो।
 न शुभ कार्य करने में पीछे रहूँ मैं।
 अशुभ कार्यो से, खबरदार कर दो॥ प्रभु मेरे॥१
- २— मैं गाऊँ सदा वेद की ही ऋचाएं।
 कि तन मन में मेरे वेदों का संचार कर दो॥ प्रभु मेरे॥२
- ३— मेरा सर झुके तो, झुके तेरे दर पर।
 मुझे ऐसा दुनियाँ में सरदार कर दो॥ प्रभु मेरे॥३
- ४— मैं समझूँ न जग में किसी को बेगाना।
 मेरा विश्व भर के लिये प्यार कर दो॥ प्रभु मेरा॥४
- ५— "पथिक" राह में हो कोई दीन दुःखिया।
 मदद के लिये मुझको तैयार कर दो॥ प्रभु मेरे॥५

भजन १४३ (जन्मदिन पर)

- १—जन्म दिन आज आया है, बधाई हो बधाई हो।
 खुशी रंग है छाया, बधाई हो बधाई हो।
 हवन से है सुगन्धित हो गया, वातावरण सारा ॥
 ऋचाएं वेद की बोली गई हैं मूंजा गगन सारा।
 यह दिन ईश्वर ने दिखलाया बधाई हो बधाई हो ॥ जन्म दिन ॥१
- २—कहीं बैठे पड़ौसी हैं, कहीं बैठे हैं सम्बन्धी।
 कहीं पर कह कहे उठते, कहीं उठती है सुगन्धी।
 सभी ने प्रेम से गाया, बधाई हो बधाई हो ॥ जन्म दिन ॥२
- ३—जिधर देखो उधर मिलते नजारे ही नजारे हैं।
 दिलों में फूट निकले हैं आज खुशियों के फव्वारे हैं।
 बाग परिवार लहराया बधाई हो बधाई हो ॥ जन्म दिन ॥३
- ४—जिये सौ साल तू राजा रहे खुशहाल जीवन में।
 बहारे झूम के आए तुम्हारे दिल के आंगन में ॥
 रहे मन खूब हर्षाया, बधाई हो बधाई हो ॥ जन्म दिन ॥४
- ५—करे विद्या ग्रहण इतनी कि जग में नाम हो रोशन।
 जहाँ में चाँद सूरज की तरह काम हो रोशन ॥
 बुजुर्गों का रहे साया, बधाई हो बधाई हो ॥ जन्म दिन ॥५
- ६—हृदय अन्दर हो मधुर वाणी सदा बोले।
 धर्म की राह पर चलते हुए तिलभर नहीं डोले।
 “पथिक” निरोग हो काया बधाई हो बधाई हो ॥ जन्म दिन ॥६

भजन १४४

- १— प्यारी मैं राम की हूँ शोभा जहान की हूँ।
 सतसे नहीं डिगूंगी, ऐसी मैं जानकी हूँ।
 क्यों तेग तामता है बदले में मेरे सर के।
 तेरा ही सर कटेगा, पक्की निशान की हूँ ॥ प्यारी ॥१
- २— लडकी जनक की हूँ मैं खंजर से क्या डरूंगी।
 कुछ तो विचार पापी किस खानदान की हूँ ॥ प्यारी ॥२
- ३— यह वंश बेल तेरी मिट कर के ही रहेगी।

- मत जान जानकी हूँ, दुश्मन मैं जानकी हूँ ॥ प्यारी ॥३
 ४— तोड़ा धनुष राम ने जय माल मैंने डाली ।
 ब्याही हुई मैं ऐसी, शौकत वो शान की हूँ ॥ प्यारी ॥४
 ५— है जान जिस्म उसके, जिसको ब्याही गई हूँ ।
 पति राम है हमारे, प्यारी मैं जानकी हूँ ॥ प्यारी ॥५
 ६— जो खैर अपनी चाहे, दे पास भेज उनके ।
 चेरी मैं इन्द्र उन्हीं की कृपा निधान की हूँ ॥ प्यारी ॥६

भजन १४५

- १—किस विधि लिखूं मुरारी, प्रभु कर्मन की गति न्यारी ।
 छोटे-छोटे नयन दिये, हथिनी को, मृग नयन दिये भारी ॥ प्रभु कर्मन ॥१
 २—उजले पंख दिये बगुले को, कोयल किस विधि काली । प्रभु कर्मन ॥२
 ३—सुन्दर नार, प्रभु कौ तरसे, फूहर जन-जन हारी । प्रभु कर्मन ॥३
 ४—मूरख राजा राज करत है, पंडित फिरे भिखारी । प्रभु कर्मन ॥४
 ५—गंगाजल अमृत बनि आया, समुन्द्र कर दिया खारी । प्रभु कर्मन ॥५
 ६—कहत कबीर सुनो भाई साधे, यह गति सबकी है न्यारी । प्रभु कर्मन ॥६

भजन १४६

- १—अजब विधी कर लेखा किसी से पढ़ा नहीं जाये ।
 राज महल की रानी फिर से बनोवास पाये । अजब विधि ॥१
 २—वेदेही को त्याग दुःखी प्रभु मन ही मन होवें ।
 कंद मूल फल खाय कुश के आसन पर सोवें ॥ अजब विधि ॥२
 ३—दिन रात सिया की याद न भूले पल भी रघुराई ।
 नैनों की उड़गई नींद, उदासी मुख पर है छाई ॥
 यहां राम को रटना सीखा सदा लगाती थी ।
 जानकी सदा लगाती थी ।
 मन में रख कर प्रभु की मूरत, दुःख विसराती थी ।
 वो अपना दुःख बिसराती थी ।
 कभी सींचती बेल, कभी हिरनों को खिलाती थी ।
 कभी गूथती हार कभी गंगा जल लाती थी ॥
 कभी राम की याद कड़क बिजली सी जाती थी ।

वह भस्म भाव से मरीतड़प मन में रह जाती थी ।
 गई अंधेरी रात ऊषा आशा की बन छाई ।
 शुभ घड़ी शुभ दिन आया जानकी जननी पद पाई ।
 जानकी जननी पद पाई ।
 अजब विधिक लेख किसी से ॥ अजब

भजन १४७

धन्य है तुमको ए ऋषि, तूने हमें जगा दिया ।
 सो-सो के लुट रहे थे हम तूने हमें जगा दिया ॥ ११
 अन्धों को आँखें मिल गई मुद्दों में जाने आ गई ।
 जादू सा क्या चला दिया, अमृत सा क्या पिला दिया ॥ १२
 वाणी में क्या तासीर थी, तेरे वचन में ए ऋषि ।
 कितने शहीद हो गये कितनों ने सर कटा दिया ॥ ३॥
 अपने लहू से लेखराज, तेरी कहानी लिख गये ।
 तू ही लाला लाजपत शेर बबर बना दिया ॥ ४॥
 श्रद्धा से श्रद्धानंद ने सीने पे खाई गोलियाँ ।
 हँस-हँस के हँसराज ने तन मन व धन लुटा दिया ॥ ५॥
 तेरे दिवाने जिस घड़ी दक्षिण दिशा को चल दिये ।
 वैदिक धर्म पै हो फिदा, दुनियाँ का दिल हिला दिया ॥ ६॥

भजन १४८

चमकेंगे जब तलक यह सूरज व चाँद तारे ।
 हम हैं ऋषि दयानन्द, तब तक ऋणी तुम्हारे ॥
 भारत वर्ष की नैया, मझदार में पड़ी थी ।
 तूने ही बनके खेवट, पहुंचा दिया किनारे ॥
 ईश्वर को भूलकर, सब नाहक भटक रहे थे ।
 वेदों का ज्ञान देकर, सब भ्रम थे निवारे ॥
 खुद जहर पी गया तू हमको पिलाया अमृत ।
 तूने हमारी खातिर कितने थे कष्ट उठाये ॥
 तू वह दिया था, जिसने, लाखों दिव्ये जलाये ॥
 दी रोशनी, पथिक को सब कष्ट थे निवारे ॥

भजन १४१

तुम्हारे दिव्य दर्शन की मैं इच्छा ले के आई हूँ।
 पिला दो प्रेम का अमृत दिलासा ले के आई हूँ।
 रतन अनमोल लाते हैं, लाने वाले भेंट को तेरी।
 मैं केवल आंसुओं की मंजुमाला ले के आई हूँ॥
 जगत के रंग सब झूठे तू अपने रंग में रंगले।
 मैं अपना यह बदरंग बाना लेके आई हूँ॥
 प्रकाशानन्द हो जाये मेरी अविचारा कुटिया में।
 तुम्हारे आश्रय का विश्वास लेके मैं आई हूँ॥

तीन अमूल्य बातें

- १— समय, मौत और, ग्राहक किसी का इन्तजार नहीं करते।
- २— माता, पिता और यौवन जीवन में एक ही बार मिलते हैं।
- ३— तीर कमान से, बात जबान से, जान शरीर से निकल कर वापिस नहीं लौटते।
- ४— कुसंगति, निन्दा और स्वार्थ, इनसे हमेशा बचना चाहिए।
- ५— ईश्वर, उद्योग और विद्या इनमें मन लगाने से उन्नति होती है।
- ६— कर्ज, फर्ज, और मर्ज, इनके प्रति लापरवाही ठीक नहीं।
- ७— माता पिता और गुरु इनका सदा सम्मान करना चाहिए।
- ८— मन, काम और लोभ इनको सदा वश में रखना चाहिए।
- ९— बालक, भूखे और अपाहिज, इन पर सदा दया करनी चाहिए।

भजन १५० विश्वासघात

- १— आदमी आदमी को सुहाता नहीं।
 आदमी से अरे डर रहा आदमी।
 हाल इतना बुरा है कि विश्वास भी।
 आदमी पर नहीं कर रहा आदमी॥
- २— पालतु पशु बने पात्र विश्वास के।
 संग साथी बने वे रुदन हास के।
 आज विश्वास पशु पर भले हम करे।
 पर पड़ोसी न विश्वास है पात्र के॥

- ३— है न विश्वासघाती मनुज से अधिक ।
 बस इसी भाव से भर रहा आदमी ।
 हाल इतना बुरा है कि विश्वास भी ।
 आदमी पर नहीं कर रहा आदमी ॥
- ४— इस पतन का ही देखो परिणाम है ।
 इस तरह आदमी आज बदनाम है ।
 अस्मर्ते तक चुराने लगा यह अरे ।
 हाय नैतिक पतन का यह अंजाम है ॥
- ५— आदमी आदमी से बिचकने लगा ।
 कर्म ऐसे अरे कर रहा आदमी ।
 आदमी-आदमी को सुहाता नहीं ।
 आदमी से अरे डर रहा आदमी ॥
- ६— ऐ मनुज किस पतन गर्त में खो गया ।
 आज देवत्व तेरा कहाँ सो गया ।
 देवता भी तरसते थे जिस देह को ।
 उस मनुज देह को आज क्या हो गया ॥
- ७— जो मनुज था चढ़ा देव की दृष्टि में ।
 क्यों मनुज दृष्टि से गिर रहा आदमी ।
 हाल इतना बुरा है कि विश्वास भी ।
 आदमी पर नहीं कर रहा आदमी ॥
- ८— हम मनुज ही मनुज का सहारा बनें ।
 डूबतों के लिए हम किनारा बनें ।
 क्यों न पाने हमें लोग बेचैन हों ।
 हम अगर प्रेम की पुण्य धारा बनें ।
- ९— लोग कहने लगे फिर हमें देखकर ।
 धन्य इतिहास को कर रहा आदमी ।
 आदमी-आदमी को सुहाता नहीं ।
 आदमी से अरे डर रहा आदमी ॥

- ऐसे परिवार को ही स्वर्ग कहा जाये ॥
 सत्य रग-रग में जिनके रमा हो।
 खुश रहता है उनसे विधाता।
 प्रेम सीने में जिनके नहीं है।
 उनको ईश्वर नजर दूर आता।
 कुछ सुहाता नहीं सत्संग भाता नहीं।
 जीवन पशुओं से बदतर बिताये। वेद पढ़ा जाये ॥१
- २— कर्म नेकी जो कर गये हैं।
 विश्व में नाम उनका अमर है।
 उनके जीवन की ज्योति से।
 अनगिन भूले पथिकों ने पाई डगर है।
 धर्म छोड़ा नहीं नियम तोड़ा नहीं।
 जाते उनके सदा गीत गाये। वेद पढ़ा जाये ॥२
- ३— अन्न भूखों को नंगों को कपड़ा जो देते रहे।
 और देंगे दया हृदय में जिनके बसी है।
 वह अन्याय और ना संकटों से कभी झंझटों से
 कभी निर्भय विचारे नहीं घबराये हैं। वेद पढ़ा जाये ॥३
- ४— वह घट-घट रमा प्राण प्यारा सारा संसार।
 यह है उसी का स्वयंम स्वार्थ में फंसके।
 जो बन्दा दिल दुखाये नहीं वो किसी का।
 स्वप्न में भी कभी दोष आते नहीं।
 राघव मानव वही कहलाये ॥
 वेद पढ़ा जाये और हवन किया जाये
 ऐसे परिवार को ही स्वर्ग कहा जाये।

भजन १५२ राग कालिंगड़ा-तीन तान।

मन यस्त हुआ तब क्यों बोले ॥

हीरा पायो गांठ मठियायो। बार-बार वाके क्यों खोले ॥१॥ मन०

२—हलकी थी जब चढी तराजू। पूरी भई तब क्यों तोले ॥२॥ मन०

३—सूरत कलारी भई मतवारी। मदवायी, नई बिज ताले ॥३॥ मन०

४—हंसा पाये मानसरोवर। ताल तलैया, क्यों डोले ॥४॥ मन०

- ५—तेरा साहिब है घट माही। बाहर नैन कयों खोले ॥ ५ ॥ मन०
 ६—कहे कबीर सुनो भाई साधो साहिब मिल गये तिल ओले ॥ ६ ॥ मन०

भजन १५३ गति जीवात्मा की कोई समझाये ।

- १— कहाँ से आये और कहाँ लौट जाये ॥
 कभी, इसका आना जाना किसी ने न जाना ।
 कहाँ का निवासी है, ये कहाँ है ठिकाना ।
 किसी को भी कोई अपना पता न बताये ॥ कहाँ लौट ॥१
- २— मिली एक नगरी इसको अयोध्या निराली ।
 जो है आठ चक्रों और नौवों द्वार वाली ।
 सिर्फ चार दिन ही इसके शहंशाह कहाये ॥ कहाँ लौट ॥२
- ३— प्रभु ने हजारों तोफे बनाके दिये हैं ।
 कुदरती नजारे जग में इसी के लिये हैं ।
 इन्हें छोड़ कर क्यों जाता समझ में न आये ॥ कहाँ लौट ॥३
- ४— पथिक यह प्रभु की माया प्रभु जानता है ।
 प्रभु के सिवा न कोई पहिचानता है ।
 जो महान शक्ति सारे विश्व को चलाये ॥ कहाँ लौट ॥४
- गति जीवन की कोई समझाये ।
 कहाँ से आये और कहाँ लौट जायें ।

भजन १५४ अनुसरण भजन

- १—इस दुनियाँ में धर्मी धर्म का धन ढूँढे
 और पापी माल खजाना ॥ इस दुनिया ॥१
- २—मुटठी बांधे आया था और हाथ पसारे जाएगा ।
 इस जग में न कुछ लाया था और न कुछ साथ ले जायेगा ॥ इस दुनिया ॥२
- ३—जग जीवन में जीव का आना, कर्म भोग में फँसना रे ।
 नाम अमर कर इस जीवन को सुखी सार्थक बनाना रे ॥ इस दुनिया ॥३
- ४—इच्छाओं पर विजय प्राप्त कर पुरुषार्थ और साह भरकर,
 कर्म योग में जुट जा रे ॥ इस दुनिया ॥४
- ५—यम नियम से मन शुद्धि कर शान्त भाव से धैर्य धर कर
 ध्यान योग में लया जा रे ॥ इस दुनिया ॥५

- ६—जन सेवा से जीव का आदर प्रेम पूर्वक विद्या दान कर ।
 ज्ञान योग में बस जा रे । इस दुनिया ॥६
- ७—भक्ति भाव से आत्म समर्पण सुधर्म-धर्म का नित पालन कर ।
 सच्चिदानन्द में रमजा रे । इस दुनिया ॥७

भजन १५५

जमाना रंग बदलता है ।

रोज सुबह को दिन चढता है । शाम को ढलता है । आज हुआ है जहाँ में कोई
 शाही का भी शाह कलको वोही कौड़ी-कौड़ी को हो रहा तबाह । बिगड़ कर कोई संभलता
 है ।

बड़े बड़े हो गये जहाँ में राजा रंक फकीर जमाना ॥

खाली हाथ आये थे सब खाली गये आखीर ।

वक्त टाले नहीं टलता है । जमाना ॥

बहुतेरे खूब जहाँ में होकर माला माल

अन्त समय में हाथ झाड़ते गये काल के गाल

यहाँ वश किसका चलता है । जमाना

४—अच्छा और बुरा जैसा हो, रहजाता है नाम

इसी लिए दुनियाँ में नेकी करलो राधे श्याम,

नहीं तो वक्त निकलता है ।

भजन १५६

१—तेरे पूजन को भगवान, बना मन मन्दिर आलीशान ।

किसने जानी तेरी माया, किसने भेद तिहारो पाया ॥

हारे ऋषि मुनी कर ध्यान, बना मन मन्दिर आलीशान । तेरे पूजन ॥१

२—तूही जल में, तूही थल में, तू ही वन में ।

तू ही मन में, तेरा रूप निरूप जहान बना

मन मन्दिर आलीशान ॥ तेरे पूजन ॥२

३—तू हर गुल में तू बुलबुल में ।

तू हर डाली के हर पातन में ।

तू हर दिल में मूर्ति मान बना मन मन्दिर आलीशान तेरे पूजन ॥३

४—तू तेरा राजा बनाये, तूने विशुद्ध राज दिलवाये ।

तेरी लीला बीच जहान बना मन मन्दिर आलीशान ॥ तेरे पूजन ॥४॥
 ५—जग की झूठी माया, मूर्ख इसमें क्यों भरमाया।
 कर कुछ जीवन का कल्याण बना मन मन्दिर आलीशान ॥ तेरे पूजन ॥५॥

भजन १५७

प्रीत तुमसे लगी दुनियां से प्यार कौन करे।
 कोई कुछ भी कहे, उसका विचार कौन करे ॥
 मन है सुन्दर तो रूप रंग सभी सुन्दर है।
 व्यर्थ अस्थिर बनावटी श्रृंगार कौन करे।
 छोड़दी तेरे भरोसे पै भँवर में कशती।
 मूर्ख मांझी से विनय बार-बार कौन करे ॥
 बन गये अश्रु मोतियों की लड़ी देखो तो।
 भेंट अब तुमको यह फूलों के हार कौन करे।
 माँगना है जो वही माँग लगे तुमसे प्रकाश।
 बन के भिक्षुक पुकार द्वार-द्वार कौन करे ॥

भजन १५८

यही है आरजू भगवन, मेरा जीवन यह आता हो।
 पर उपकारी सदाचारी व लम्बी आयु वाला हो।
 सरलता शील संयम एकता हो मेरे जीवन में
 सच्चाई सादगी श्रद्धा के मन सोने में ढाला हो। यही है आरजू ॥
 तजू छल झूठ चालाकी, बनू सतसंग अनुरागी।
 गुनाहों और खताओं से मेरा जीवन निराला हो ॥ यही है आरजू ॥
 तेरी भक्ति में ओ भगवन लगादू अपना मैं तन मन।
 दिखावे के लिये हाथों में थैली हो न माला हो ॥ यही है आरजू ॥
 मेरा वे दोक्त हो जीवन,
 अनुरागी रहूँ आज्ञा में वेदों की।
 न हुक्मों वेद टाला हो।
 यही है आरजू भगवन ॥

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

॥ ओ३म् ॥

- ❀ ओ३म् परमात्मा का मुख्य नाम है ।
- ❀ आदमी दूसरों के अरमानों को क्यों कुचलता है ।
अपने अरमानों को पूरा करने के लिये ।
- ❀ दुनिया में दो चीजें बहुत कम पाई जाती हैं ।
एक तो धर्म की कमाई और दूसरे सच्चे दोस्त । उपनिषद
- ❀ कष्ट में पड़े शत्रु की जो भी सहायता करता है, और निर-
अभिमान है, वही दयालु है ॥
- ❀ क्या करेगा प्यार वह भगवान से, करना पाया प्यार जो
ईमान से ।
जन्म लेकर गोद में इंसान की, कर न पाया प्यार जो इंसान से ।
- ❀ झूठ के अनेक भाई रिश्तेदार हैं, पर सच अकेला है ।
- ❀ साँच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप ।
जाके हिरदे साँच है ताके हिरदे आप ॥

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri